रविवार

30 मार्च 2025

- देहरादून
- वर्ष 33
- अंक 61
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

33 साल से देहरादून का विश्वास

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

खन खना खन

अवैध खनन, कार्यवाही, रार और राजनीति!

❑केंद्रीय नेता भी नेताओं की रार से हैरान
❑अवैध खनन पर ताबड़तोड़ कार्यवाही जारी

विशेष संवाददाता

देहरादून। इन दिनों उत्तराखंड की सियासत अवैध खनन के मुद्दे पर इस कदर गर्माई हुई है कि भाषाई मर्यादाओं को लांघते नेताओं को इस बात की भी परवाह नहीं है कि वह किसका नुकसान कर रहे हैं। मजेदार बात यह है कि अवैध खनन पर कार्यवाही और तकरार तथा राजनीति एक साथ चल रही है।

अभी 2 दिन पूर्व हरिद्वार सांसद और पूर्व सीएम त्रिवेंद्र रावत ने संसद में राज्य के चार जिलों में अवैध खनन और उससे होने वाले नुकसान का मुद्दा उठाया था। अपनी ही सरकार को कटघरे में खड़ा करने के पीछे उनकी मंशा क्या रही होगी यह तो वही जाने लेकिन उनके इस तीर का असर इतना ज्यादा हुआ कि सरकार ने खनन सचिव को बचाव में उतार दिया। जिन्होंने अवैध खनन का खण्डन ही नहीं किया राजस्व प्राप्तियों के आंकड़े तक पेश कर डालें। एक सांसद के सवालों का जवाब एक अधिकारी दे। इस बात से त्रिवेंद्र इस कदर तिलमिला गए कि उन्होंने कह दिया कि शेर कुत्तों का शिकार नहीं करते हैं। खुद को शेर बताने वाले सांसद त्रिवेंद्र रावत ने कुत्ता शब्द का इस्तेमाल किसके लिए किया यह अलग बात है लेकिन उनके बयान से सियासत में चर्चाओं का बाजार गर्मा जाना स्वाभाविक ही था।

पूर्व सीएम हरीश रावत ने उनके बयान पर जिस तरह की टिप्पणी की है वह साफ तौर पर यह बताती है कि विपक्ष कांग्रेस के नेता इस मुद्दे पर किस कदर चुटकी ले रहे हैं। उन्होंने प्रेम प्रसंग का उल्लेख करते हुए सभी भाजपा नेताओं को लपेटे में ले लिया तथा इसे भाजपा नेताओं के अहंकार से जोड़ते हुए त्रिवेंद्र को गलत ठहरा दिया। धामी और त्रिवेंद्र के बीच सियासी अदावत के कारण उपजे इस विवाद पर भाजपा के शीर्ष नेता भी हैरान परेशान है।

वहीं दूसरी ओर राज्य में इन दिनों अवैध खनन के खिलाफ कार्रवाई भी ताबड़तोड़ जारी है। एक दिन पूर्व विकास नगर क्षेत्र में अवैध खनन से लदे कई डंपर व ट्रैक्टर ट्राली सीज किए गए थे तो बीती रात पौड़ी में तीन अवैध खनन में जुटे वाहनों को सीज किया गया है। जो इस बात को बताता है कि त्रिवेंद्र ने जो मुद्दा संसद में उठाया था वह गलत नहीं था लेकिन कुछ लोग इसे त्रिवेंद्र सिंह रावत की सीएम की कुर्सी जाने की टींस से भी जोड़कर देख रहे हैं जब मार्च 2021 में उन्हें सीएम पद से इस्तीफा देना पड़ा था। खनन तो इस रार के लिए सिर्फ बहाना भर बताया जा रहा है। सवाल यह भी है कि क्यों अवैध खनन को लेकर किसी नेता को वैसी चिंताएं भी हो सकती है जैसी कि त्रिवेंद्र रावत द्वारा दिखाई जा रही है।

इस तरह बरकरार रहेगी खूबसूरती

मौसम के बदलने के साथ ही अनेक समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। मौसम में बदलाव के साथ ही हमें अपनी सौंदर्य आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए मौसम के अनुरूप ढालना चाहिए, ताकि हमारी त्वचा तथा बालों को पर्याप्त देखभाल मिल सके। हम हर मौसम में सुंदर दिखना चाहते हैं, लेकिन इसके लिए त्वचा की प्रकृति, मौसम के मिजाज व इसकी पोाक जरूरतों के प्रति निरंतर सजग रहना पड़ता है। इस मौसम में त्वचा में नमी की कमी की वजह से रूखे लाल चकत्ते भी पड़ जाते हैं।

चकत्ते होने पर तत्काल रासायनिक साबुन का प्रयोग बंद कर देना चाहिए। साबुन की बजाय सुबह-शाम क्लीनजर का उपयोग करना चाहिए। इसी तरह घरेलू आयुर्वेदिक उपचार के तौर पर त्वचा पर तिल के तेल की मालिश कर सकते हैं। वैकल्पिक तौर पर दूध में कुछ शहद की बूंदें डालकर इसे त्वचा पर लगाकर 1०।15 मिनट तक लगा रहने दीजिए तथा बाद में इसे ताजे स्वच्छ जल से धो डालिए। यह उपचार सामान्य तथा शुक दोनों प्रकार की त्वचा के लिए उपयोगी है।

वहीं यदि त्वचा तैलीय है तो 5० मिलीलीटर गुलाब जल में एक चम्मच शुद्ध ग्लीसरीन मिलाइए। इस मिश्रण को बोतल में डालकर इसे पूरी तरह मिला कर इस मिश्रण को चेहरे पर लगा लीजिए। इससे त्वचा में पर्याप्त आर्द्रता बनी रहेगी तथा ताजगी का अहसास होगा। तैलीय त्वचा पर भी शहद का लेप कर सकते हैं। शहद प्रभावशाली प्राकृतिक आद्रता प्रदान करके त्वचा को मुलायम तथा कोमल बनाता है।

वसंत ऋतु के दौरान रोजाना 15 मिनट तक शहद का लेप चेहरे पर करके उसे स्वच्छ ताजे पानी से धो सकते हैं। इससे त्वचा पर पड़े विपरीत प्रभाव को कम करने में मदद मिलती है। वसंत ऋतु में एलर्जी की समस्या बढ़ जाती है, जिससे त्वचा में खारिश, चकत्ते तथा लाल धब्बे हो जाते हैं। ऐसे में चंदन क्रीम को त्वचा का संरक्षण तथा रंगत रखने में काफी उपयोगी माना जाता है। त्वचा के रोगों खासकर फोड़े, फुंसी लाल दाग तथा चकत्ते में तुलसी भी अत्याधिक उपयोगी है। त्वचा के घरेलू उपचार में नीम तथा पुदीना की पत्तियां भी काफी सहायक मानी जाती हैं। त्वचा की खाज, खुजली तथा फुंसियों में चंदन पेस्ट का लेपन कीजिए। चंदन पेस्ट में थोड़ा सा गुलाब जल मिलाकर उसे प्रभावित त्वचा पर लगाकर आधा घंटा बाद ताजे पानी से धोयें।

चंदन के दो या तीन बूंद तेल को 5० मिलीलीटर गुलाब जल में मिलाइए तथा इसे प्रभावित स्थान पर लगाइए। त्वचा की खारिश में एपल सिडर विनेगर काफी मददगार साबित होता है। इससे गर्मी की जलन व बालों में रूसी की समस्या को निपटने में मदद मिलती है। नींबू की पत्तियों को चार कप पानी में हल्की आंच पर एक घंटा उबालिए। इस मिश्रण को टाइट जार में रातभर रहने दीजिए। अगली सुबह मिश्रण से पानी निचोड़ कर पत्तियों का पेस्ट बना लीजिए और इस पेस्ट को प्रभावित त्वचा पर लगा लीजिए। एक चम्मच मुलतानी मिट्टी को गुलाब जल में मिलाकर इस पेस्ट को प्रभावित स्थान पर लगाकर तकरीबन बीस मिनट बाद धो लीजिये। त्वचा की खारिश में बायोकाबोर्नेट सोडा भी अत्यधिक प्रभावशाली साबित होता है। बायोकाबोर्नेट सोडे तथा मुलतानी मिट्टी एवं गुलाब जल का मिश्रण बनाकर पैक बना लें। इसे खारिश, खुजली चकते तथा फोड़े-फुंसियों पर लगाकर 1० मिनट बाद ताजे जल से धो लीजिए। इससे त्वचा को काफी राहत मिलेगी।

चांद पर खरगोश

गंगा के किनारे एक वन में एक खरगोश रहता था। उसके तीन मित्र थे- बंदर, सियार और ऊदबिलाव। चारों ही मित्र दानवीर बनना चाहते थे। एक दिन बातचीत के क्रम में उन्होंने उपोसथ के दिन परमींदान का निर्णय लिया क्योंकि उस दिन के दान का संपूर्ण फल प्राप्त होता है। ऐसी बौद्धों की अवधारणा रही है। (उपोसथ बौद्धों के धार्मिक महोत्सव का दिन होता है)। जब उपोसथ का दिन आया तो सुबहैंसवेरे सारे ही मित्र भोजन की तलाश में अपने-अपने घरों से बाहर निकले। घूमते हुए ऊदबिलाव की नजर जब गंगा तट पर रखी सात लोहित मछलियों पर पड़ी तो वह उन्हें अपने घर ले आया। उसी समय सियार भी कहीं से दही की एक हांडी और मांस का एक टुकड़ा चुरा, अपने घर को लौट आया। उछलतींकूदता बंदर भी किसी बाग से पके आम का गुच्छा तोड़, अपने घर ले आया। तीनों मित्रों ने उन्हीं वस्तुओं को दान में देने का संकल्प लिया। किन्तु उनका चौथा मित्र खरगोश तो कोई साधारण प्राणी नहीं था।

उसके स्वयं के त्याग का निर्णय संपूर्ण ब्रह्माण्ड को दोलायमान करने लगा और सक्क के आसन को भी तप्त करने लगा। वैदिक परम्परा में सक्क को शक्र या इन्द्र कहते हैं। सक्क ने जब इस अति अलौकिक घटना का कारण जाना तो सन्यासी के रूप में वह उन चारों मित्रों की दान-परायणता की परीक्षा लेने स्वयं ही उनके घरों पर पहुँचे। ऊदबिलाव, सियार और बंदर ने सक्क को अपनेंअपने घरों से क्रमश मछलियाँ, मांस और दही य एवं पके आम के गुच्छे दान में देना चाहा। खरगोश ने दान के उपयुक्त अवसर को जान याचक को अपने संपूर्ण शरीर के मांस को अंगीठी में सेंक कर देने का प्रस्ताव रखा।

जब अंगीठी जलायी गयी तो उसने तीन बार अपने रोमों को झटका ताकि उसके रोमों में बसे छोटे जीव आग में न जल जाएँ। फिर वह बड़ी शालीनता के साथ जलती आग में कूद पड़ा। सक्क उसकी दानवीरता पर स्तब्ध हो उठे। चिरकाल तक उसने ऐसी दानवीरता न देखी थी और न ही सुनी थी। हाँ, आश्चर्य ! आग ने खरगोश को नहीं जलाया क्योंकि वह आग जादुई थीय सक्क के द्वारा किये गये परीक्षण का एक मार्यींजाल था। सम्मोहित सक्क ने तब खरगोश का प्रशस्ति गान किया और चांद के ही एक पर्वत को अपने हाथों से मसल, चांद पर खरगोश का निशान बना दिया और कहा, जब तक इस चांद पर खरगोश का निशान रहेगा तब तक हे खरगोश ! जगत् तुम्हारी दान वीरता को याद रखेगा।

देश का अस्तित्व जुड़ा है पहाड़-नदियों से

ज्ञानेन्द्र रावत

आज देश के भाल हिमालय का समूचा क्षेत्र संकट में है। इसका प्रमुख कारण इस समूचे क्षेत्र में विकास के नाम पर अंधाधुंध बन रहे अनगिनत बांध, पर्यटन के नाम पर हिमालय को चीर कर बनायी जा रही ऑल वैदर रोड और उससे जुड़ी सड़कें हैं। दुख इस बात का है कि हमारे नीति-नियंताओं ने कभी भी इसके दुष्परिणामों के बारे में सोचा तक नहीं। वे आंख बंद कर इस क्षेत्र में पनबिजली परियोजनाओं को और पर्यटन को ही विकास का प्रतीक मानकर उनको स्वीकृति-दर-स्वीकृति प्रदान करते रहे हैं, बिना यह जाने-समझे कि इससे पारिस्थितिकी तंत्र को कितना नुकसान उठाना पड़ेगा।

विडम्बना यह है कि यह सब उस स्थिति में हो रहा है जब दुनिया के वैज्ञानिकों ने इस बात को साबित कर दिया है कि बांध पर्यावरण के लिए बड़ा खतरा हैं और दुनिया के दूसरे देश अपने यहां से धीरे-धीरे बांधों को समेटते जा रहे हैं। इसके लिए किसी एक सरकार को दोष देना मुनासिब नहीं होगा। वह चाहे संप्रग सरकार हो या फिर राजग। जहां तक संप्रग सरकार का सवाल है तो उसने पर्यावरणविदों और गंगा की अस्मिता की रक्षा के लिए किये जा रहे आंदोलनकारियों के दबाव में उत्तराखण्ड में बांधों के निर्माण पर रोक लगा दी थी लेकिन 2०14 में सत्ता परिवर्तन के बाद राजग सरकार ने न केवल बांधों के निर्माण को मंजूरी दी बल्कि इस क्षेत्र में पर्यटन के विकास की खातिर पहाड़ों को काट-काटकर सड़कों के निर्माण को मंजूरी दे दी।

यदि यह सिलसिला इसी तरह जारी रहा तो इस पूरे हिमालयी क्षेत्र का पर्यावरण कैसे बचेगा। विडम्बना यह है कि हमारी सरकार और देश के नीति-नियंता, योजनाकार यह कदापि नहीं सोचते कि हिमालय देश का भाल है, गौरव है, स्वाभिमान है, प्राण है। जीवन के सारे आधार यथा- जल, वायु, मृदा सभी हिमालय की देन हैं। देश की तकरीबन 65 फीसदी आबादी का जीवन आधार हिमालय ही है क्योंकि उसी के प्रताप से वह फलीभूत होती है। यदि उसी हिमालय की पारिस्थितिकी प्रभावित होती है तो देश प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा।

वैज्ञानिक, पर्यावरणविद् और समाज विज्ञानी सभी मानते हैं कि हिमालय की सुरक्षा के लिए सरकार को इस क्षेत्र में जल, जंगल और जमीन को बचाने के लिए पर्वतीय क्षेत्र के विकास के मौजूदा मॉडल को बदलना होगा। उसे बांधों के विस्तार की नीति भी बदलनी होगी। साथ ही पर्यटन के नाम पर सड़कों के लिए पहाड़ों के विनाश को भी रोकना होगा। बांधों से नदियां तो सूखती ही हैं, इसके पारिस्थितिकीय खतरों से निपटना भी आसान नहीं होता। यदि एक बार नदियां सूखने लगती हैं तो फिर वे हमेशा के लिए खत्म हो जायेंगी। पहाड़ नहीं होंगे तो हमारा वर्षा चक्र प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा, परिणामत: मानव अस्तित्व खतरे में पड़ जायेगा।

शायद इसी खतरे को भांपते हुए दिवंगत राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित माउंट एवरेस्ट पर पहले भारतीय पर्वतारोही दल की ऐतिहासिक जीत के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर कहा था कि हिमालय को प्रदूषण से बचाना आज की सबसे बड़ी चुनौती है। इसलिए इस क्षेत्र में पारिस्थितिकी संरक्षण के लिए काम करने की महती आवश्यकता है। विडम्बना यह कि इस बात को सरकार और उसके कारकुन मानने को कतई तैयार नहीं हैं। उनके लिए नदी मात्र जल की बहती धारा है। चाहे हिमालय के उत्तर-पूर्व हों या पश्चिमी राज्य, सभी ने पर्यावरण के सवाल को दरकिनार करने में ही अपनी भलाई समझी। उत्तराखण्ड के रूप में अलग राज्य बनने के बाद इसमें और बढ़ोतरी हुई। इसमें सबसे महत्वपूर्ण काम यह हुआ कि पर्यावरण का सवाल पृष्ठभूमि में धकेल दिया गया।

यह पूरा क्षेत्र भूकंप के लिहाज से अति संवेदनशील है। तात्पर्य यह कि सिस्मिक जोन पांच में होने के कारण इस क्षेत्र में भूकंप का हमेशा खतरा बना ही रहता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली नदियों और वनों को यदि समय रहते नहीं बचाया गया तो इसका दुष्प्रभाव पूरे देश पर पड़े बिना नहीं रहेगा। असलियत यह है कि विकास के ढेरों दावों के बावजूद अभी भी हिमालय क्षेत्र में रहने वाली तकरीबन 8० फीसदी आबादी सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित है। जिसकी वजह से वह पलायन को विवश हैं। हिमालय क्षेत्र के तकरीबन सैकड़ों गांव आज भी अंधेरे में रहने को विवश हैं। 6०-65 फीसदी देश के लोगों की प्यास बुझाने वाला हिमालय अपने ही लोगों की प्यास बुझाने में असमर्थ है। आवश्यकता इस बात की है कि सत्ता प्रतिष्ठान इस हिमालयी क्षेत्र की पारिस्थितिकी की वजहों के हल तलाशें और ऐसे विकास को तरजीह दें ताकि पर्यावरण की बुनियाद मजबूत हो और उसे व्यापक बनाने की दिशा में अनवरत प्रयास किए जाते रहें।

जीवन का गणित

गिरीश्वर मिश्र

हर किसी के जीवन में उतार-चढ़ाव आते हैं। कभी बड़े अच्छे अनुभव होते हैं तो कभी क्षोभ और कुंठा का सामना करना पड़ता है।

अक्सर जब जरूरत पूरा करने लिए आवश्यक साधन नहीं होते हैं तो मुश्किल बढ़ जाती है। पर साधन होते हुए भी यदि काम न हो सके तब बड़ी झुंझलाहट होती है। पॉकेट में दो हजार के कड़क ताजे नोट रख हम दूकान पर पहुंचे और दूकानदार से सामान देने को कहा। सामान की कीमत चार सौ रुपये थे। उसने सामान निकाल कर रख दिया। मैंने पैसा चुकाने के लिए दो हजार का एक ताजा नोट दिया। दूकानदार ने देखा कि उसके पास वापस करने के लिए सोलह सौ के नोट नहीं हैं। सब अपनी जगह हैं : खरीददार यानी ग्राहक है, बेचने वाला दूकानदार भी है, पैसा भी है पर सौदा खरीदने की बात बन नहीं पा रही है। हम बिना सामान खरीदे बैरंग थके हारे लौट कर घर वापस आ गए। आज बाजार के गणित के सूत्र थोड़े उलझ से गए लगते हैं। इस छोटी सी घटना ने मेरा ध्यान इस बात की ओर खींचा कि हम कौन हैं? क्यों जी रहे हैं?और कैसे जी रहे हैं? यानी हमारे जीने का गणित कैसा चल रहा है। ये सवाल कुछ अमूर्त से हैं क्योंकि जीवन का अनुभव करते हुए भी जीने की कोई स्पष्ट परिभाषा देना सरल नहीं है।

जब लोगों से पूछ कर जानना चाहा तो यही बात उभर कर सामने आई कि जो भी हो सबके जीने का असली मकसद एक ही ह्रैज्यादा से ज्यादा सुख या आनंद हासिल करना। इसके लिए ही अच्छे-बुरे तरह-तरह के उपाय किए जाते हैं। पर इतना तय है कि सुख क्या है और कैसे मिलता है इसका कोई एक तरीका नहीं है। आम तौर पर सुख को इच्छाओं के पूरा होने से जोड़ा जाता है। पर सारी इच्छाओं को पूरा करते जाना संभव ही नहीं है क्योंकि उनकी फेहरिश्त कभी खत्म होने का नाम ही नहीं लेती। कारण कि इच्छा पूरी होने पर मर नहीं जाती, वह किसी दूसरी इच्छा को जन्म देती है। यानी इच्छाओं का चक्र होता है। उनका तांता लगा रहता है। सच्चाई यह है कि हमारे लिए अब बस, और नहीं यह कहना बड़ा ही मुश्किल होता है। भूख प्यास को तो हम पूरा कर थोड़ी देर तक संतुष्ट रह कर इच्छामुक्त रह पाते हैं क्योंकि इसकी भौतिक सीमा तय शुदा होती है कि पेट में कितना जा सकेगा। पर कुछ समय बाद वे फिर सिर उठा लेती हैं। इनके सामने हमारी कुछ नहीं चलती।

शारीरिक जरूरतों से ऊपर स्थित मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, प्रेम, भक्ति, प्रीति, लोभ आदि की कोई सीमा नहीं होती है। ये हमारे मानसिक-सामाजिक सरोकारों की परिणति हुआ करते हैं। इन्हें हम स्वयं ही रचन्रेगढ़ते हैं। इनके सहारे अपनी दुनिया बनाते और बसाते हैं। इन्हीं में हम सुख ढूंढ़ते हैं। जीवन इनके लिए साधन हो जाता है और ये अर्जित इच्छाएं-भावनाएं हम पर हावी होती जाती हैं। जन्मजात न होने से ये स्वाभाविक या प्राकृतिक तो नहीं होतीं। जिस पर भी ये बड़ी ही प्रभावी हो जाती हैं। इनकी यात्रा अविराम चलती रहती है। हम अपने को इन इच्छाओं की दुनिया में किसी एक ठांव पर स्थिर कर लेते हैं और उसी के अधीन हो जाते हैं। उसी की धुन लग जाती है और सब कुछ उसी के इर्द-गिर्द चलने लगता है।

शायद इसी तरह की केंद्रिकता को ही लक्ष्य कर गीता में कहा गया कि अच्छा मनुष्य स्वयं ही अपना उद्धार करता है। मनुष्य खुद ही अपना सबसे बड़ा मित्र और सबसे बड़ा शत्रु है। जिसने स्व अपने पर विजय पा ली, उसके लिए उसका स्व सबसे बड़ा मित्र और जो ऐसा नहीं कर सका वह सबसे बड़ा शत्रु हो जाता है। आज उपभोग की लालसा और बढ़ती महत्त्वाकांक्षा के चलते लोगों में चिंता और बेचैनी बढ़ती जा रही है। आर्थिक और तकनीकी परिवर्तन इतने तीव्र वेग से हो रहा है कि अनिश्चय, असुरक्षा और अविास का दायरा बढ़ता जा रहा है। लोगों में भय, शिथिलता और अवसाद बढ़ रहा है। दूसरी ओर सकारात्मकता की भावना निरंतर घटती जा रही है। परन्तु जीवन में पीड़ा और वेदना कोई नई बात नहीं है, उससे हमारा पुराना रिश्ता है। यह जरूर है कि उनका स्वभाव और तीव्रता आज बदल गई है।

समाज की धड़कन बयां करते शब्द

शंभूनाथ शुक्ल

हर लिखी या बोली चीज साहित्य नहीं है। तारीखों के सिलसिलेवार तरीके से पेश करने को हम इतिहास का दर्जा देते हैं मगर उस समय के मूल्यों और सामाजिक आदर्शों व व्यवस्था को पूरे लालित्य के साथ पेश करने की विधा साहित्य कहलाती है। यह भले इतिहास से अलग हो लेकिन उस समय के समाज का बखूबी चित्रण उसमें होता है। किसी भी समय के समाज की वास्तविकता को समझने के लिए उस समय का साहित्य बहुत उपयोगी होता है। कोई भी साहित्य समय और समाज के निरपेक्ष नहीं लिखा जा सकता। साहित्यकार भी आखिर होता तो मनुष्य ही है, इसलिए उस समय के समाज की स्थिति का उस पर असर पड़ना स्वाभाविक है। चाहे कितना साहित्य को स्वान्तः सुखाय कहा जाए मगर साहित्यकार अपने समाज के सुखदुख को समझे बिना साहित्य का सृजन कर ही नहीं सकता। भले वह पौराणिक साहित्य हो, मध्यकालीन हो अथवा आधुनिक साहित्य। इस तरह कहा जा सकता है कि इतिहास को समझने के लिए उस समय का साहित्य एक महत्वपूर्ण कड़ी होता है। वेद्रपुराण और रामायण व महाभारत जैसे महाकाव्यों को आधुनिक इतिहासकार मिथ बताकर खारिज कर देते हैं मगर वे भूल जाते हैं कि भले उनकी ऐतिहासिक वास्तविकता सिद्ध न हो सके पर हैं वे अपने समय के दर्पण ही।

अगर हमें मानव और भारतीय सभ्यता को समझना है तो वेद्रपुराणों में वर्णित घटनाओं को जस का तस तो नहीं लेकिन यह मानकर चलना ही होगा कि उस समय दर्शन के क्षेत्र में कैसीकैसी कल्पनाएं की जा रही थीं और उस लिहाज से हम उस समय की ऐतिहासिकता को समझ ही सकते हैं। साथ ही यह भी पता चल सकता है कि सभ्यताएं अपने शुरुआती दौर में कैसीकैसी मान्यताओं और नैतिक मूल्यों के दौर से गुजरीं। उनकी आज के विकसित दौर से तुलना करना एक ऐसी भूल है जिससे पूरे इतिहास क्रम को गलत समझा जाएगा।

मार्क्सवादी चिंतक फ्रेडरिक एंगेल्स ने अपनी मशहूर पुस्तक 'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य का उदय' में ग्रीक पुराणों की कल्पनाओं को मात्र मिथ ही नहीं बल्कि उस समय के समाज को समझने का सबसे पुख्ता आधार माना है। तुलसी ने अपने साहित्य को स्वान्तः सुखाय कहा है। वे लिखते हैं 'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा, भाषा निबंध, मति, मंजुल मातनोति।' लेकिन क्या तुलसी का साहित्य तत्कालीन समाज व व्यवस्था से कट कर रह पाया। तुलसी जान्नेअनजाने कई जगह तत्कालीन अव्यवस्था का उल्लेख करते हैं। कवितावली और विनय पत्रिका में जब वे उस समय के समाज की दारुण स्थिति की झलक पेश करते हैं तो लगता है कि तुलसी मात्र भक्त कवि नहीं थे बल्कि बड़ी सफाई से वे अपने समय के लोगों के दुख व तकलीफों का सजीव वर्णन करते हैं।

कबीर तो खैर खुल्लमखुल्ला अपने को विरोधी करार देते हुए साफ कहते हैं' जो घर फूंके आपनो चले हमारे साथ', तब ये भक्त कवि सिर्फ ईश्वर भक्ति की ही तस्वीर नहीं रखते बल्कि अपने समय की हकीकत से भी रूबरू कराते हैं। अब्दुर्रहीम खान्नए्खाना मुगल बादशाह जहांगीर के जुल्मों से तंग आकर चित्रकूट चले गए और वहीं से रीवां नरेश को यह कविता भेजी

चित्रकूट में रमि रहे रहिमन अवध नरेश।
जा पर विपदा परत है सो आवे यहि देश

एक मिथक के बहाने वे बता देते हैं कि रीवा नरेश मैं चित्रकूट आ गया हूं और जिस किसी पर भी विपदा पड़ती है वह यहां जरूर आता है। मध्य काल के साहित्य में ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाएंगे। गुरु नानक जब 'खुरासान खसमाना कीया, हिंदुस्तान डराया' लिख रहे थे तब वे उस समय बाबर के हमले का वर्णन ही कर रहे थे। यही है साहित्य के जरिए समाज का वास्तविक चित्रण। आधुनिक साहित्य में भी हर समय का अपना साहित्य है। आज गोदान उतना समीचीन नहीं है जितना कि उस वक्त था जब वह लिखा गया था। गांव में आज न तो वैसी कृषि व्यवस्था है, न सामाजिक व्यवस्था। इसी तरह श्रीलाल शुक्ल के राग दरबारी के शिवपाल गंज से आज के किसी कस्बेनुमा गांव की तुलना की जाए तो यह तुलना बेमानी होगी। यह साठ और सत्तर के दशक का गांव है। और वैद जी तथा अन्य पात्र भी उसी युग के समाज का दर्पण हैं। सुरेंद्र वर्मा का मुझे चांद चाहिए एक युग परिवर्तनकारी उपन्यास है पर उसके पात्र नब्बे के दशक के समाज की उपज हैं। इसी तरह आज जो उपन्यास लिखे जा रहे हैं, वे आज के समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस मामले में हिंदी सिनेमा जरूर शहरी मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है। 1964 में जब देवानंद व वहीदा रहमान की 'गाइड' फिल्म आई थी तब वह अपने समय की माइलस्टोन कही जाने वाली फिल्म थी। यह पहली फिल्म थी जिसने विवाहेतर संबंध को नैतिक बताने की हिम्मत की। इसके पहले ऐसे संबंधों को फिल्माने की हिम्मत किसी में नहीं थी। ताजा फिल्म 'पीकू' में इन मूल्यों में आए बदलाव की एक जबरदस्त कहानी पेश की है। पत्रकारिता को भी क्षणिक साहित्य कहा जाता है। इसमें भी लालित्य होता है और अपने पाठकों व दर्शकों को बांधे रखने का कौशल भी। अकसर इतिहासकारों को तिथिवार चीजें लेने में पत्रकारिता का सहारा लेना पड़ता है। कोई भी घटना हो, उसके बारे में पत्रकार का अपना नजरिया होता है लेकिन यह नजरिया उपजा उसी समाज से होता है, जिसमें वह पत्रकार पल्लबढ़ा। इसलिए इसे खारिज नहीं किया जा सकता। यही हाल अन्य संचार माध्यमों का है। भले वह गल्प साहित्य (फिक्शन) हो अथवा फिल्म व पत्रकारिता। मगर कोई भी संचार माध्यम अपने समाज से इतर नहीं पनप सकता। भारत में अलग्रअलग समय के समाज को जानना हो तो उस वक्त के साहित्य को पढ़ना बहुत जरूरी है। वेद व पुराण में तमाम किस्से अविश्वसनीय तो लग सकते हैं पर अगर उन अविश्वसनीय बातों को अलग कर उस साहित्य को समझने का प्रयास करें तो उस समय के बारे में काफी कुछ पता चलता है।

गृहिणी श्रम पारिश्रमिक का अनुत्तरित प्रश्न

हर्षदेव

क्या महिलाओं को घर के कामकाज और देखभाल के लिए मेहनताना देने का समय आ गया है! इस घरेलू व्यस्तता के कारण ही तो वे मनचाहा मुकाम हासिल करने में पिछड़ जाती हैं या फिर उनको अपने कैरियर की कुर्बानी देनी पड़ती है। दुनियाभर में महिलाओं को उनकी मेहनत का हक़ दिलाने की मुहिम के समर्थन में आवाज उठाने वालों की तादाद लगातार बढ़ रही है। हाल में चीन की एक अदालत ने नयी मिसाल पेश की, जब तलाक के एक मुकदमे में ऐतिहासिक फैसला देते हुए पति को आदेश दिया कि वह अपनी पत्नी को घरेलू कामकाज में श्रम और समय खपाने का हर्जाना (लगभग 5.5 लाख रुपये) भी अदा करे! चीन महिलाओं को श्रम के मुआवजे के लिए कानून भी ले आया गया है। भारत में इस दिशा में पहल तमिल फिल्मों से राजनीति में कदम रख रहे कमल हासन ने की है। कमल हासन ने महिलाओं को उनके मेहनताने का हक़ दिलाने का घोषणापत्र में वादा करके समाज को उसके कर्तव्य की याद दिलाई है।

भारत में महिलाओं पर किया गया एक अध्ययन बताता है कि उनको पुरुषों से पांच गुना ज्यादा काम करना पड़ता है। इन निष्कर्षों के अनुसार देश में लगभग 16 करोड़ स्त्रियों का जीवन घरेलू कामों में ही पूरा हो जाता है। गांवों में स्थिति और भी अधिक अन्यायपूर्ण है। वहां गृहिणी को औसतन 14 घंटे काम करना होता है। विकसित देशों में भारत के मुकाबले स्त्रीपुरुष के बीच काम के घंटों का अंतर केवल दो गुना है।

महिलाओं के मामले में भारत की तरह ही चीन का समाज भी परंपरागत सोच वाला है। वहां घरेलू कामकाज के मुआवजे का कानून लाया गया तो वैचारिक क्षेत्र में जबरदस्त बहस छिड़ गई। फिर अदालत ने पत्नी को मेहनताना देने का आदेश दिया तो लोगों ने उसको किसी अजूबे की तरह लिया। इस फैसले को इंटरनेट पर 60 करोड़ से भी ज्यादा लोगों ने देखा। नये कानून में महिला का मेहनताना उसके काम के घंटों और पति के घर में सहयोग तथा उसकी आय के आधार पर तय करने का प्रावधान है। कई अन्य देशों में भी इस दिशा में बहस और विमर्श चल पड़ा है। इस मामले में वेनेजुएला बहुत सजग है। वहां पहले से ही घरेलू महिलाओं के लिए कानूनी आधार पर मुआवजा देने की व्यवस्था है। यह महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा की गारंटी है। इसके अनुसार उनके मूल वेतन में घरेलू कामों का मुआवजा भी जोड़ कर दिया जाता है। वेनेजुएला की महिलाओं का कहना है कि यह भुगतान जरूरी है क्योंकि इससे उनमें आत्मविश्वास के साथ ही आजादी और वित्तीय सुरक्षा का अहसास रहता है।

क्या भारत में महिलाओं को घरेलू देखभाल के लिए मुआवजे के प्रावधान को लागू किया जा सकता है! इस पर समाजशास्त्रियों की राय बंटी हुई है। लंदन के किंग्स कॉलेज के विधि और सामाजिक न्याय विभाग में प्रोफेसर प्रभा कोटेस्वरन कहती हैं कि भारत के लिहाज से घरेलू स्त्रियों को मेहनताना देने की कमल हासन की पेशकश अनूठी है। यह घरेलू बंधन और घोर सामाजिक असमानता और असुरक्षा के विरुद्ध एक अभिनव विचार है। अभी तक महिलाओं की स्थिति अवैतनिक कामगार की तरह रही है। ऐसी व्यवस्था पर विचार करते समय पहला प्रश्न यह होगा कि घरेलू कामकाज और देखभाल के श्रम का हिसाब कैसे लगाया जाए! एक और विचारणीय प्रश्न विवाहित और अविवाहित स्त्रियों के श्रम में अंतर का भी उठेगा। हालांकि घरेलू काम के मुआवजे का ताल्लुक परिश्रम की मान्यता, आर्थिक आत्मनिर्भरता और आजादी के अहसास से ज्यादा है। फिर भी, काम के नापतौल का तरीका सोचना भी तो जरूरी होगा। प्रो. कोटेस्वरन कहती हैं 'मैं इस मामले में भारत की अदालतों के मोटर वाहन कानून के अंतर्गत महिलाओं के लिए तय किए जाने वाले मुआवजे को शुरुआती कदम के रूप में देखती हूं। ये अदालतें करीब तीन दशक से हिसाब्रकिताब का यह तरीका अपना

▶▶ शेष पृष्ठ 4 पर

शिक्षा के सपने और बदलता परिदृश्य

गिरीश्वर मिश्र

भारत के मध्यवर्गीय समाज के लिए शिक्षा हर मर्ज की दवा मानी गई है। और यह कोई आज की ही धारणा या विचार नहीं है।

अनंतकाल से ही भारत में विद्या, ज्ञान और शिक्षा बड़े पवित्र और शक्तिशाली विचार रहे हैं। माना जाता रहा है कि इनसे सब कुछ पाया जा सकता है। गुजरता समय भी इस अवधारणा को धूमिल नहीं कर पाया है। आम भारतीय के मन में अभी भी कुछ ऐसी सोच बची है पर आचरण में शिक्षा के सरोकारों को लेकर तेजी से बदलाव आ रहा है। बेशक, समय में आए बदलाव ने बहुत कुछ बदल डाला है।

कहना न होगा कि बच्चों की शिक्षा के साथ माता-पिता की अपनी महत्वाकांक्षाएं भी जुड़ी होती हैं। वे बच्चों के माध्यम से वह सब करना और पाना चाहते हैं, जो वे कभी अपने जीवन में खुद तो चाहे थे, पर कर या प्राप्त नहीं सके थे। दरअसल, वे समय के किसी कालखंड में अपनी खंडित हो चुकी महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा होने का जरिया अपने बच्चों को ही मान बैठते हैं। बच्चों को अपने से श्रेष्ठ, सुखी और समृद्ध जीवन उपलब्ध कराना हर माता-पिता की दिली ख्वाहिश होती है। इसी करके उनमें अपने बच्चों में अपनी सुख-शांति का प्रतिबिंब दिखाई देने लगता है। शिक्षा सपने देखना सिखाती है और मनुष्य को उन गुणों से समृद्ध करती है जो बीज रूप में तो व्यक्ति में मौजूद होते हैं पर व्यक्त होने के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण का इंतजार करते रहते हैं। यदि शिक्षण-प्रशिक्षण की स्थितियां मुहैया कराई जाएं तो बच्चों में बीज रूप में मौजूद गुण पुष्पित होने में तनिक विलंब नहीं होता। शिक्षा ज्ञान, कौशल और मनोवृत्ति को विकसित कर नई शक्ति देती है। और अगर अच्छी शिक्षा मिली तो आदमी में देखे गए सपनों को सच करने की काबिलियत भी पैदा होती है। सही अथरे में शिक्षा व्यक्ति का कायाकल्प ही कर देती है। वह जीवन जीने का सलीका सीख जाता है।

शिक्षा से हमारी यह अपेक्षा होती है कि वह व्यक्ति के मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक सभी पक्षों यानी मनुष्य के समग्र विकास को संभव बनाती है। वह एक विनम्र व्यक्ति के रूप में विकसित होता है। देश-समाज के रूप में एक विनम्र नागरिक के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार हो जाता है। कहा भी जाना है -विद्या ददाति विनयम। लेकिन हम कहीं न कहीं चूक रहे हैं। इसी के चलते आज हम शिक्षा को धीरे-धीरे सिर्फ आर्थिक समृद्धि के माध्यम तक सीमित करते जा रहे हैं। अब बदलते दौर में लोग 'अच्छी शिक्षा' उसे मानने लगे हैं, जो व्यक्ति को ज्यादा से ज्यादा आर्थिक सम्पन्नता उपलब्ध करा सके। आज छात्रों में वाणिज्य (कॉमर्स) से जुड़े व्यावसायिक पाठक्रमों जैसे सीए और एमबीए आदि की ओर रु झान और उनमें दाखिले की बढ़ती मार देख कर यही लगता है। हद तो तब होती है जब आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों से बीटेक की तकनीकी डिग्री हासिल कर विद्यार्थी तकनीकी व्यवसाय छोड़ आईआईएम से एमबीए की डिग्री पाने की दौड़ में शामिल हो जाता है। इसका एक कारण शायद पीढ़ियों चले आ रहे गरीबी के दर्द से छुटकारा पाने की कोशिश भी होती है।

दूसरी ओर, भारत में शिक्षा का नाकनक्श भी तेजी से बदल रहा है। अब शिक्षा-दीक्षा बच्चों के माता-पिता के लिए वर्षों तक अनवरत चलने वाला एक युद्ध का रूप ले चुका है। शिशु-कक्षा या किंडर गार्डेन (केजी) से जो बच्चों के प्रवेश की मुहिम शुरू होती है सो कहीं ठहरने-थमने का नाम ही नहीं लेती।

अभिभावकों के लिए बच्चों के शैक्षिक कॅरियर को उनके मुकाम तक पहुंचाना बेहद थकाऊ और संघर्षशील हुआ जा रहा है। बच्चे अब विश्व स्तर की शिक्षा पाने के लिए मचल रहे हैं। उनके मन का मुकाम किसी अच्छे अमेरिकी विवि में दाखिला पाना होता है। माता-पिता भी इसी लक्ष्य का समर्थन करते हैं। वे अपने पीएफ से या बैंक से शिक्षा-कर्ज ले कर, घर को बंधक रख कर किसी न किसी युक्ति से बच्चों को अच्छे से अच्छे स्कूल में दाखिल करने की चेष्टा करते हैं। बड़ी-बड़ी कैपीटेशन फीस, जो मेडिकल में एक करोड़ रपये से ज्यादा ही बैठती है, दे-दे कर पढ़ा रहे हैं। भारत में आईआईटी और आईआईएम में प्रवेश पा जाने में सफलता की कोई गारंटी नहीं होने के कारण कई अभिभावक विदेशी डिग्री दिला कर विदेश में ही या फिर किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में भारत में ही नौकरी की गुंजाइश निकालने का यत्न करते हैं। निजीकरण और वैंीकरण के दबाव में भारतीय शिक्षा को लेकर अनेक प्रश्न उठ रहे हैं, इसलिए शिक्षा के ढांचागत स्वरूप, उसकी सांस्कृतिक-सामाजिक प्रासंगिकता और समग्र व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से पाठक्रम और उसके संचालन पर गंभीर ढंग से पुनर्विचार की सख्त जरूरत है। आज शिक्षा नीति बनाते समय हमारे लिए शिक्षा के उभरते परिदृश्य पर गौर करना बहुत आवश्यक हो गया है।

लिपि संसार का सुंदर एहसास

ललित शर्मा

यह सोचना कितना आश्चर्यजनक और सुखद है कि यदि आड़ी-तिरछी रेखाओं से शुरू हुई चीजें अगर आज इतने सभ्य तरीके से हमारे सामने नहीं होती तो हम कैसे एक-दूसरे को कुछ समझाते या समझते। अगर सिर्फ बातों से काम चलता तो भी कैसे होता। समझता कोई नहीं।

सब जानते हैं कि विचारों को व्यक्त करने का माध्यम वाणी है। यह वाणी विभिन्न भाषाओं के माध्यम से संसार में प्रकट होती है। इन भाषाओं को दीर्घावधि तक स्थाई रूप से सुरक्षित रखने एवं एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने का कार्य लिपि करती है। कहा जाए तो भाषा को जीवंत रखने के लिए हम जिन प्रतीक चिन्हों का प्रयोग करते हैं, उन्हें लिपि कहते हैं। हम गुहा चित्रों, भग्नावशेषों, समाधियों, मंदिरों, मृदा भांडों, मुद्राओं के साथ शिलालेखों, चट्टान लेखों, ताम्रलेखों, भित्ति चित्रों, ताड़पत्रों, भोजपत्रों, कागजों एवं कपड़ों पर अंकित मनुष्य की सतत भाषाई एवं लिपिय प्रगति देख सकते हैं। इन सबको तत्कालीन मानव जीवन का साक्षात इतिहास कहा जा सकता है।

सभ्यता और संस्कृति के विकास के साथ-साथ भाषा एवं लेखन कला का विकास भी होता रहा। प्रारंभ में लिखने के साधन गुफाओं की दीवारें, ईंट, पत्थर, मृद्पात्र एवं शिलापट्ट आदि थे। देश, काल एवं परिस्थिति अनुसार ये साधन बदलते गये और लिपि एवं भाषा परिष्कृत होती गई। विचारों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा एवं लिपि प्रथम साधन है। लिपि के अभाव में अनेक भाषाएं उत्पन्न होकर नष्ट हो गईं। लिपियां भी समाप्त हो गईं, वे भी इससे अछूती नहीं रहीं। ललितविस्तर आदि प्राचीन ग्रंथों में तत्कालीन प्रचलित लगभग चौंसठ लिपियों का नामोल्लेख मिलता है, लेकिन आज उनमें में अधिकांश लिपियां अथवा उनमें लिखित साहित्य उपलब्ध नहीं है।

कुछ प्राचीन लिपियां आज भी एक अनसुलझी पहेली बनी हुई हैं। उनमें लिखित अभिलेख आज तक नहीं पढ़े जा सके हैं। आज हम देखते हैं कि भारत में बहुधा प्राचीन स्थलों, पर्वतों एवं गुफाओं में टंकित 'शंख लिपि' के सुन्दर अभिलेख प्राप्त होते हैं। इनको भी आज तक नहीं पढ़ा जा सका है। इस लिपि के अक्षरों की आकृति शंख के आकार की है।

जब भी मैं प्राचीन स्थलों पर शंख लिपि को देखता हूं तो मन जिज्ञासा से भर उठता है। आज भी विविध सिक्कों, मृद्पात्रों एवं मुहरों पर लिखित ऐसी कई लिपियां और भाषाएं हमारे संग्रहालयों में विद्यमान हैं जो एक अनसुलझी पहेली बनी हुई हैं। समय को प्रतीक्षा है इन पहेलियों के सुलझने की। जब इनमें कैद इतिहास बाहर निकल कर सामने आएगा और नई जानकारियां मिलेंगी।

लिपियों का यह संसार है रोचक। जितना हम जानते हैं, शायद उससे कई गुना उसके अनजाने पहलू हैं। है न लिपियों की बात करना बहुत सुंदर एहसास।

गृहिणी श्रम पारिश्रमिक का अनुत्तरित...

◀◀ पृष्ठ 3 का शेष

रही हैं। इसके लिए महिला की सामाजिक हैसियत, वैवाहिक जीवन में उसका योगदान और यदि वह कमाती है तो उसकी मासिक आय को आधार बनाया जाता है। हालांकि, कुछ जज महिलाओं के मातृत्व का कोरा गुणगान और उनको राष्ट्र निर्माता बताकर पुरुषवादी सोच वाले निरर्थक फैसले देते हैं लेकिन विचारशील न्यायिक अधिकारी विवाहित महिलाओं के मामले में सामाजिक समानता और श्रम के अनुपात को ध्यान में रखकर मुआवजा तय करते हैं।'

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन ऐसे काम को अवैतनिक बताता है जो घर के अन्य व्यक्तियों या समुदाय की देखभाल अथवा निर्वाह के लिए किया जाए। इसमें प्रत्यक्ष या परोक्ष दोनों ही काम शामिल हैं। संगठन के अनुसार भारत में स्त्रियां घरेलू कामों के लिए हर दिन 297 मिनट खर्च करती हैं जबकि पुरुष केवल 31 मिनट का समय घर में देते हैं।

महिलाओं को मुआवजा दिए जाने के विचार को भारतीय सामाजिक व्यवस्था के सन्दर्भ में देखें तो सबसे अहम प्रश्न यह भी है कि उनके श्रम का भुगतान करने का जिम्मा कौन पूरा करेगा! क्या पति करेंगे भुगतान या सरकार करेगी अथवा टैक्स की राशि में से उनका पारिश्रमिक चुकाया जाएगा

कमल हासन की पहल का अंजाम जो भी हो, कुछ बातें तय हैं कि हम जब स्त्रीपुरुष समानता की बात करें तो समझ लें कि चाहे काम के बंटवारे में लैंगिक गैरबराबरी की बात हो या बिना भुगतान श्रम की अथवा मजदूरी में भारी अंतर की, हमें बहुत लम्बा रास्ता तय करना है क्योंकि जीवन की वास्तविकताएं पुरुषवादी सोच और 'प्रेम' तथा 'कर्तव्य' की पारिवारिक परम्पराओं में बहुत गहरे तक धंसी हुई हैं और उनसे छुटकारे के लिए लम्बी बहस और तार्किकता की जरूरत है।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

दिल के आईने में खूबसूरत ज़िंदगी

रेनू सैनी

आईना वह होता है, जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व नज़र आता है। व्यक्ति का व्यक्तित्व केवल बाहरी आईने में ही नज़र नहीं आता, अपितु दिल के आईने में भी नज़र आता है। व्यक्ति का दिल एक ऐसा आईना है जो पल भर में सामने वाले के व्यक्तित्व की सूरत और सीरत दोनों प्रस्तुत कर देता है। जिन व्यक्तियों का दिल एकदम साफ होता है, उन्हें पढ़ना बेहद सरल होता है और ऐसे लोग ही दिलों को छू जाते हैं जो व्यक्ति अपने दिल में ईर्ष्या, लोभ, प्रतिशोध आदि की भावना को दबाए रखते हैं, उनके शरीर को अनेक रोग लग जाते हैं।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ के अनुसार कम से कम तीस लाख लोग जीवन में किसी न किसी समय पैनिक डिसऑर्डर के शिकार होते हैं। ये लोग नियमित रूप से दिल से जुड़े गंभीर लक्षण महसूस करते हैं, जिनमें दिल की धड़कन तेज होना, सीने में दर्द, दहशत और नियंत्रण खोने का डर शामिल है। हृदय शब्द व्यक्ति के लिए कई अर्थ स्पष्ट करता है। एक सैनिक के लिए हृदय जोश और उत्साह का परिचायक होता है। एक प्रेमी-प्रेमिका के लिए यह रोमांचकारी अहसास लिए होता है तो खिलाड़ियों के लिए यह साहस का स्रोत होता है। जिंदगी को भरपूर जीने के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण दिल का साफ होना ही होता है।

'बॉयज टाउन ऑरफैनेज' के संस्थापक विलियम एफ. जेम्स का कहना था कि, 'सफलता के लिए सिर्फ तीन चीजें जरूरी हैं– पहली बुद्धि, दूसरी संकल्प और तीसरी ईमानदारी। जीवन के सफर में हमारा मुकाबला प्रतिदिन अनेक कठिन चुनौतियों से होता है। इन चुनौतियों का सामना जो सच्चे दिल से करते हैं, वे जीत जाते हैं। वहीं जो लोग चुनौतियों को देखकर भयभीत होकर भाग जाते हैं या झूठ का सहारा लेते हैं, वे सदा टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर ही भटकते रहते हैं।

एक बार कॉलेज के चार विद्यार्थी परीक्षा छोड़कर सिनेमा देखने चले गए। जब वे वापस आए तो प्रिंसिपल ने उन चारों को एक साथ देखकर कहा कि तुम चारों एक साथ इस समय कहां से आ रहे हो तुमने आज की परीक्षा भी नहीं दी। तभी उनमें से एक के मुंह से निकल गया-सर हम सभी एक गाड़ी में थे। उस गाड़ी का टायर पंक्चर हो गया। इसलिए हम परीक्षा देने के लिए समय पर नहीं पहुंच पाए। प्रिंसिपल ने उनके चेहरे के भावों को देखकर वास्तविकता को समझ लिया। वे बोले, 'ठीक है, तुम चारों को अब परीक्षा में शामिल होने का अवसर दिया जाता है।' इसके बाद प्रिंसिपल ने उन चारों को अलग-अलग कमरों में बैठा दिया। उन चारों के प्रश्न पत्र पर केवल एक ही प्रश्न था कि कौन-सी गाड़ी का टायर पंक्चर हुआ था इस प्रश्न को देखकर चारों कमरों में उपस्थित चारों विद्यार्थियों ने अपना सिर पकड़ लिया। उन सबका जवाब अलग-अलग था।

जाहिर है कि वे परीक्षा में तो फेल हुए ही, इसके साथ ही उनके झूठ के प्रकट होने पर उनके दिल की बेईमानी भी प्रिंसिपल पर प्रकट हो गई। वे चारों पूरे जीवनभर अपनी इस अद्भुत परीक्षा को नहीं भूल पाए। ड्यूक यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर में बिहेवियरल मेडिसन रिसर्च सेंटर के निदेशक डॉ. रेडफोर्ड विलियम्स ने अपनी पुस्तक, 'द ट्रस्टिंग हार्ट' में कहा है कि, 'जिन लोगों के पास विश्वास करने वाला हृदय होता है, उनके अधिकांश जीवन में स्वस्थ और दीर्घायु रहने की संभावना ज्यादा होती है।' किसी भी संबंध को जीवन भर निभाने का सूत्र भी यही है कि व्यक्ति का साफ हृदय न केवल दिलों को छूता है बल्कि आईना बनकर जीवन भर चमकता है।

मदर टेरेसा कोलकाता के गरीबों के लिए करुणा की देवी थीं। उनका हृदय निस्स्वार्थ प्रेम और करुणा से भरा हुआ था। वे सड़क पर ही लोगों के घावों को साफ करने बैठ जाती थीं। इसलिए उन्हें विश्व के सबसे प्रसिद्ध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। बहुत अच्छी सूरत के अंदर अगर एक खूबसूरत दिल नहीं है तो वह ज्यादा समय तक प्रभावित नहीं कर सकती। जब तक व्यक्ति का दिल भीतर से निर्मल नहीं होगा, तब तक बाहर के कार्य पर सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा। जब व्यक्ति दिल से जुड़े मामलों के बारे में आश्वस्त और सुरक्षित हो जाता है तो उसके व्यक्तित्व में आत्मविश्वास एवं उत्साह झलकने लगता है। क्या आपके दिल का आईना साफ है। ये काम तो आप अकेले में बैठकर अभी कर सकते हैं। किसी एकांत स्थान में बैठ जाएं और अपने इन सवालों का सही सही जवाब दें। क्या आप दूसरों के दुख में दिल से दुखी अनुभव करते हैं। क्या आप दूसरों की परवाह करते हैं क्या आप सहजता से क्षमा मांग लेते हैं

इन सवालों का जवाब यदि 'हां' में आता है तो निश्चित ही आपके दिल का आईना साफ और अनमोल है। बेशकीमती है। बहरहाल, आप जान गए हैं कि अपने दिल के आईने को साफ कैसे रखना है अपने दिल के आईने को साफ रखिए।

शब्द सामर्थ्य -76

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. व्यर्थ, अकारण, बेवजह (उर्दू) 4. साथ में, सहित 5. वर्षा, बारिश, बरखा 8. कथा, किस्सा 9. चिढ़चिड़ा, बदमिजाज 11. प्रलय, आफत, हलचल 12. लाख ढकने का कपड़ा 13. पिता, क्लर्क, सम्मानित व्यक्ति 14. वायु, पवन 16. निवास करना, उपस्थित होना, ठहरना 18. जिसे लात खाने की आदत हो गई हो 19. सेवक, दास, चाकर 21. भ्राता 22. मेघ, जलद, नीरद।

ऊपर से नीचे

1. विशेष, विशिष्ट 2. सुगंध, खुशबू 3. आदमी, मनुष्य, मानव 5. अपेक्षाकृत, अपेक्षया 6. कष्ट, दर्द, दिक्कत 7. पठन, पढ़ने का काम, शिक्षा 10. किस्मत, नसीब, भाग्यवान 12. एक पक्षी जो पुराने समय में संदेश वाहक का काम करता था 13. बाल, बच्चा, लड़का, छोकरा 17. वायु संबंधी, हवा में रहने, उड़ने या होने वाला, बिलकुल काल्पनिक और निर्मूल 19. नाव, कश्ती 20. वर्ष, बरस, एक इमारती वृक्ष।

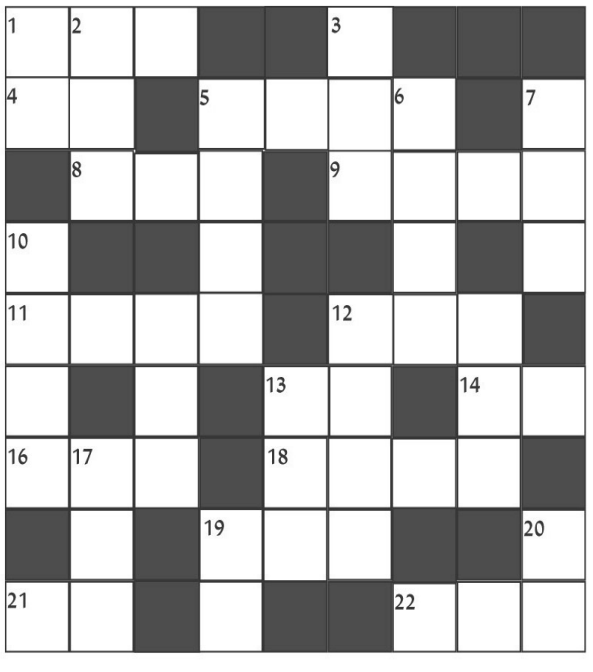

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 75 का हल

पं	क्ति		स्वा	द		स	ब	ब
जा		सु	हा	ना			ली	द
ब	हु	धा		द	ल	ना		ल
		क	मा	न		ग	ह	ना
भं	व	र				वा	म	
गी	त		म	ज	बू	र		ट
	न	म	स्का	र				र
		र्या			बी		ना	का
सं	वि	दा		ब	स	च	ल	ना

एक सीन के सहारे सुभाष घई ने लिख दी थी 'कर्ज' की पटकथा

फिल्म निर्माता-निर्देशक सुभाष घई ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट शेयर कर बताया कि साल 1980 में रिलीज 'कर्ज' की पटकथा को उन्होंने कैसे लिखा। फिल्म से जुड़े एक सीन का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि एक सीन के इर्द-गिर्द उन्होंने फिल्म की पटकथा लिख डाली थी।

कर्ज से जुड़े एक सीन की तस्वीर को इंस्टाग्राम पर शेयर करते हुए सुभाष घई ने लिखा, फिल्म कर्ज का निर्माण केवल इस एक सीन की वजह से हुआ। एक ऐसा क्षण जब मां की आत्मा अपने मरे हुए बेटे की आत्मा को पहचान जाती है और

उसके बेटे मोंटी को छोड़कर हर कोई हैरान रह जाता है। मैंने इस सीन के इर्द-गिर्द पूरी कहानी की पटकथा लिख डाली थी। कभी नहीं सोचा था कि यह एक कल्ट क्लासिक होगी और 45 साल बाद भी इसकी चर्चा होगी।

एक पोस्ट में सुभाष घई ने बताया कि उनकी फिल्म निर्माण कंपनी मुक्ता आर्ट्स कलाकारों की नहीं बल्कि उन लेखकों और निर्देशकों की तलाश कर रही है, जो पैन सिनेमा के लिए बेहतरीन काम कर सकें। घई ने इंस्टाग्राम पर शेयर किए गए पोस्ट में बताया कि उनकी फिल्म निर्माण कंपनी मुक्ता आर्ट्स भारतीय सिनेमाघरों में सिनेमा का जादू चलाने के लिए तैयार है। इसके लिए वह बेहतरीन लेखकों और निर्देशकों की तलाश भी कर रहे हैं।

घई ने बताया कि वह दर्शकों के लिए फिर से कुछ नया और शानदार लेकर आने के लिए तैयार हैं। घई ने दिवंगत अभिनेता ऋषि कपूर और टीना मुनीम स्टारर फिल्म 'कर्ज' की शूटिंग की झलक भी दिखाई थी। तस्वीर में उनके साथ ऋषि और टीना भी नजर आए। इंस्टाग्राम पर शेयर की गई तस्वीर में ऋषि कपूर दिखाई दिए, उनके सामने टीना खड़ी हैं और बीच में घई खड़े नजर आए।

घई ने तस्वीर के साथ लिखा, यकीन नहीं होता...45 साल पहले ऋषि कपूर और टीना मुनीम की फिल्म कर्ज का निर्देशन किया।

पुष्पा 3 : द रैम्पेज के लिए करना होगा 3 साल इंतजार

वर्ष 2024 दिसम्बर 5 को प्रदर्शित हुई निर्देशक सुकुमार की अल्लू अर्जुन अभिनीत पुष्पा 2- द रूल भारतीय सिने इतिहास की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर्स फिल्मों में शामिल हुई थी। इस फिल्म के अन्त में इसके तीसरे भाग की घोषणा की गई थी। अब इस फिल्म के निर्माताओं ने पुष्पा फ्रेंचाइजी के तीसरे भाग पुष्पा 3- द रैम्पेज के प्रदर्शन तिथि की घोषणा की है। यह फिल्म वर्ष 2028 में प्रदर्शित होगी। ज्ञातव्य है कि पुष्पा 2 - द रूल ने ग्लोबल बॉक्स ऑफिस पर शानदार सफलता हासिल करते हुए करीब 1,750 करोड़ रुपये का कलेक्शन किया था, जिससे यह भारत की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर्स में से एक बन गई। अब, निर्माता रविशंकर ने पुष्टि की है कि पुष्पा 3 साल 2028 में रिलीज होगी।

इस देरी के पीछे मुख्य वजह अल्लू अर्जुन की आगामी फिल्में हैं। पहले उन्हें निर्देशक एटली के साथ एक फिल्म पूरी करनी है, फिर वह त्रिविक्रम संग एक और प्रोजेक्ट में काम करेंगे। इन दोनों फिल्मों के अगले दो सालों में पूरा होने की उम्मीद है। इसके अलावा, पुष्पा के निर्देशक सुकुमार भी पहले सुपरस्टार राम चरण के साथ अपने अगले प्रोजेक्ट पर काम करेंगे और उसके बाद पुष्पा 3 पर फोकस करेंगे।

अल्लू अर्जुन की पुष्पा फ्रैंचाइज़ी हर फिल्म के साथ एक नया मुकाम हासिल कर रही है। हाल ही में फिल्म के डायलॉग राइटर श्रीकांत विसा ने खुलासा किया कि पुष्पा 3 अपने पिछले भाग पुष्पा 2 की तुलना में और भी बड़ी, भव्य और दमदार होने वाली है। इस बार फिल्म में दर्शकों को नए किरदारों के साथ पहले से भी ज्यादा शानदार एक्शन और ड्रामा देखने को मिलेगा।

मेकर्स फिल्म के विलेन के लिए एक बड़े बॉलीवुड स्टार को कास्ट करने की योजना बना रहे हैं, जिससे फिल्म को और भी बड़ा बनाया जा सके। हालांकि, इस बारे में अभी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। गौरतलब है कि 2021 में रिलीज़ हुई पुष्पा- द राइज़ ने वर्ल्डवाइड 350 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई की थी और यह साल की सबसे बड़ी ब्लॉकबस्टर फिल्मों में से एक बन गई थी। इसके बाद, पुष्पा 2 - द रूल ने बॉक्स ऑफिस पर धमाल मचाते हुए जबरदस्त ओपनिंग हासिल की और अब तक की तीसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म बन गई।

अब पुष्पा 3 को मेकर्स इसे पहले से भी ज्यादा भव्य और ग्रैंड बनाने की तैयारी में जुटे हुए हैं, जिससे यह एक और ऐतिहासिक सफलता दर्ज कर सके।

पर्दे पर सुपर आइकॉनिक श्रीदेवी का किरदार निभाना चाहती हैं तमन्ना भाटिया

अभिनेत्री तमन्ना भाटिया स्क्रीन पर दिवंगत अभिनेत्री श्रीदेवी की भूमिका निभाना चाहती हैं। न्यूज एजेंसी आईएएनएस से बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि उनकी यह तमन्ना है कि वह सुपर आइकॉनिक अभिनेत्री की भूमिका को पर्दे पर उतारें।

ब्लेंडर्स प्राइड फैशन टूर में लेबल ब्लोनी के लिए शोस्टॉपर बनीं तमन्ना से जब पूछा गया कि वह स्क्रीन पर किस अभिनेत्री के किरदार को निभाना चाहेंगी, तो उन्होंने आइकॉनिक एक्ट्रेस श्रीदेवी का नाम लिया। तमन्ना ने कहा, मैं श्रीदेवी का किरदार निभाना चाहूंगी। वह सुपर आइकॉनिक थीं और वह ऐसी शख्सियत हैं जिनकी मैं प्रशंसक रही हूं।

भारतीय सिनेमा की 'पहली महिला सुपरस्टार' के रूप में लोकप्रिय श्रीदेवी ने कॉमेडी से लेकर फैमिली ड्रामा तक, विभिन्न विधाओं के साथ सिनेमा के हर हिस्से को छुआ। वह भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं, मगर वह शानदार फिल्मों के जरिए हमेशा जिंदा रहेंगी। श्रीदेवी हिंदी के साथ तेलुगू, तमिल, मलयालम और कन्नड़ भाषा की फिल्मों में काम कर चुकी हैं।

उन्होंने अपने फिल्मी करियर में 'मिस्टर इंडिया', 'खुदा गवाह', 'लाडला', 'जुदाई', 'इंग्लिश विंग्लिश', 'मॉम' जैसी शानदार फिल्मों में काम किया। श्रीदेवी की आखिरी फिल्म 'मॉम' थी, जो 2017 में रिलीज हुई थी। श्रीदेवी की पहली हिंदी फिल्म सोलहवां सावन (1979) थी। इससे पहले वह फिल्म जूली में मेन लीड की बहन के रूप में दिखी थीं।

तमन्ना के वर्कफ्रंट की बात करें तो वह पिछली बार नीरज पांडे के निर्देशन में बनी फिल्म 'सिकंदर का मुकद्दर' में नजर आई थीं, जिसमें उनके साथ जिमी शेरगिल, अविनाश तिवारी, राजीव मेहता और दिव्या दत्ता अहम भूमिकाओं में हैं। तमन्ना जल्द ही अशोक तेजा के निर्देशन में तैयार फिल्म ओडेला 2 में नजर आएंगी। संपत नंदी ने फिल्म की कहानी लिखी है। फिल्म में तमन्ना, हेबाह पटेल और वशिष्ठ एन. सिम्हा के साथ नागा महेश, वामसी, गगन विहारी, सुरेंद्र रेड्डी और पूजा रेड्डी भी अहम भूमिकाओं में हैं।

ओडेला तेलंगाना के ओडेला गांव में हुई वास्तविक घटनाओं पर आधारित है।

अभिषेक की 'बी हैप्पी' पर बोले अमिताभ बच्चन- इससे बड़े गर्व की बात कुछ नहीं

मेगास्टार अमिताभ बच्चन अपने बेटे अभिषेक बच्चन की 'बी हैप्पी' में उनके काम के लिए मिल रही सराहना से अभिभूत हैं। उन्होंने कहा कि एक पिता के लिए इससे बड़े गर्व की बात कुछ नहीं हो सकती।

अभिषेक की हालिया रिलीज फिल्म 'बी हैप्पी' को मिल रही सराहना से गदगद अमिताभ ने अपने ब्लॉग पर लिखा, अभिषेक की फिल्म बी हैप्पी की सराहना से मैं अभिभूत हूं.. एक पिता के लिए इससे बड़े गर्व की बात कुछ नहीं हो सकती।

उन्होंने अपने प्रशंसकों को फिल्म देखने और अभिषेक के काम को पसंद करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने लिखा, मैं उन सभी प्रशंसकों और दोस्तों का आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने फिल्म देखी और अपना प्यार, आशीर्वाद दिया।

अमिताभ बच्चन ने एक्स हैंडल पर पोस्ट शेयर कर अभिषेक के प्रदर्शन की सराहना की थी। बिग बी ने लिखा, अभिषेक, आज बी हैप्पी देखी, आप पर गर्व है। आपने बहुत ही शानदार अभिनय किया है।

बी हैप्पी' के बारे में बता दें कि यह एक डांस ड्रामा है, जो 14 मार्च को अमेजन प्राइम पर रिलीज हुई। फिल्म का निर्देशन रेमो डिसूजा ने किया है। फिल्म में परिवार के सपनों, ताकत और प्यार के साथ ही एक पिता-पुत्री के रिश्ते को दिखाया गया है। फिल्म 'बी हैप्पी' में अभिषेक बच्चन के साथ नोरा फतेही, इनायत वर्मा, जॉनी लीवर और हरलीन सेठी भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं। फिल्म का निर्माण रेमो डिसूजा एंटरटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के बैनर तले लिजेल ने किया है।

अमिताभ बच्चन के वर्कफ्रंट की बात करें तो वह लोकप्रिय गेम शो 'कौन बनेगा करोड़पति' के अपकमिंग सीजन को होस्ट करने के लिए तैयार हैं। बिग बी ने खुद इसकी पुष्टि की।अमिताभ बच्चन ने यह घोषणा उस समय की है, जब ऐसी अफवाहें चली थीं कि वह (अमिताभ) शो को छोड़ सकते हैं। बीते 12 मार्च को मेकर्स ने अमिताभ का एक वीडियो जारी किया था, जिसमें उन्होंने प्रशंसकों से कहा कि मैं अगले सीजन में आपसे मिलूंगा।

साधो देखो जग बौराना

गनेशी लाल

भारत एक ऐसा देश है, जहां अनेक धर्म, अनेक भाषाएं, अनेक जातियां, अनेकों वर्ग संप्रदाय एक साथ मिलकर रहते हैं। यही कारण है कि भारत को विविधता में एकता वाले देश के नाम से दुनिया में जाना जाता है और यही उसकी खूबसूरती भी है। लेकिन कुछ वर्षों से तथाकथित धार्मिक लोग इस देश का आधा से ज्यादा भाग अलग करने में लगे हुए हैं वे चाहते हैं कि भारत की विविधता को खत्म करके एक संकुचित सांप्रदायिक अड्डा बना दिया जाए; बाकी लोग जो सनातन से भाई-बंधु की तरह इस देश में रह रहे थे उनके अस्तित्व को खत्म कर दिया जाए। इसी मानसिकता के कारण आए दिन देश में हिंदू मुस्लिम दंगे भड़कते रहते हैं और दूरदर्शन पर जो वैचारिक बहसें होती हैं वह आजकल बच्चों की अबोध लड़ाई की तरह हो गई हैं।

ज्ञान-विज्ञान, तर्क-वितर्क का देश में कोई खास महत्व नहीं रह गया। धर्म और राजनीति वैसे तो दुनिया के लगभग सभी देशों में कलह के माध्यम रहे हैं। कोई ऐसा समय नहीं रहा जब धर्मों ने राजनीति से मिलकर कोई विवाद शुरू करके आम जनता को त्रस्त न किया हो। लेकिन आज जब दुनिया चांद और मंगल तब तक पहुंच गई है, उत्तर-आधुनिक युग चल रहा है विज्ञान का विकास चरमोत्कर्ष को प्राप्त कर चुका है। ऐसे समय में छोटे-मोटे धार्मिक संकुचित मुद्दों में देश को अपना समय नहीं बर्बाद करना चाहिए। यदि हम ऐसे निरर्थक कार्यों में अपना वक्त जाया करेंगे तो आने वाले समय की सामयिक चुनौतियों से निपट नहीं सकेंगे। आज देश में जनसंख्या विस्फोट, जल संकट, प्राकृतिक खतरे, शैक्षिक अव्यवस्था इत्यादि कुछ ऐसे जरूरी विषय हैं जिन पर चर्चा करके उनका निराकरण ढूंढना अत्यावश्यक। आज हम देश की साझा संस्कृति को निरंतर नष्ट करते जा रहे हैं, आदिवासियों को खत्म करते जा रहे हैं प्रकृति के साथ प्रकृति से लापरवाही के साथ खिलवाड़ कर कर रहे है जिसके फलस्वरूप तमाम प्राकृतिक संकट गहराता जा रहे हैं; देश की राजधानी दिल्ली में सीमा से अधिक प्रदूषण इस बात का पुख्ता प्रमाण है। कई नदियों, जलाशयों में पानी नहीं रह गया है पानी के नाम पर उनमें केवल मल मूत्र बह रहा है। उदाहरण के लिए - मथुरा वृंदावन में -जहां यमुना कभी (के समय) जीवन का केंद्र थी, कवियों के काव्य की सुंदरता थी आज मल मूत्र में परिवर्तित हो गई है। गंगा जिसे भारतीय मनीषा में सुरसरि कहा गया है आज प्रदूषण और गंदगी से तबाह है उसका जल आचमन करने के लायक भी नहीं बचा है। यह तो रहीं प्राकृतिक समस्याएं; अब ज़रा आज की महंगाई - आम आदमी के प्रयोग में लाई जाने वाली सारी चीजें जैसे तेल, गैस, दाल और पेट्रोल इत्यादि लगभग दुगुना दाम में बिक रहे हैं। कंपटीशन की तैयारी करने वाला विद्यार्थी जो कर्ज लेकर तैयारी करता है वह फांसी लगाकर मरने के लिए मजबूर है। परीक्षा देने के बाद रिजल्ट नहीं आता रिजल्ट आया तो 6 साल तक मामला न्यायालयों में चलता। अकादमिक दुनिया की हालत ऐसी है जहां कोई नियम कानून शेष नहीं रह गया, पीएच.डी चयन का पैटर्न कैसा होना चाहिए देश के बड़े-बड़े प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों की का इससे कोई सरोकार नहीं है। कभी कोई यह नहीं सोचता कि चयनित शोधार्थी किस आधार पर चयनित किए गए हैं। यह किसी एक विश्वविद्यालय की स्थिति नहीं है देश के लगभग सभी विश्वविद्यालयों की कमोबेश हालत यही है।

ऐसे अनेक जरूरी विषयों को छोड़कर देश की राजनीतिक सत्ताएं और हमारा समाज निरर्थक धार्मिक बहसों में उलझा पड़ा है, इतिहास के गड़े मुर्दे उखाड़ कर सांप्रदायिक दंगे भड़काने की पूरी की पूरी व्यवस्था की जा रही है। ऐसे नाजुक समय में कबीर का याद आ जाना स्वाभाविक है। मध्यकाल में पैदा हुए भारत के अन्यतम संतो में से एक कबीर को जाना जाता है कबीर ने अपने समय की धार्मिक बुराइयों, सांप्रदायिक विद्वेष तथा अमानवीय और अराजक शक्तियों के खिलाफ अपनी भक्ति और साधना के माध्यम से समाज में बिगुल बजाया था। कबीर न हिंदू के हैं, न मुसलमान के। वे उन सभी लोगों के पुरखे हैं जो समाज में मनुष्यता और इंसानियत की बरकत चाहते हैं। अपने समय में उन्होंने जो-जो बातें कही हैं; उनको पढ़ कर ऐसा लगता है जैसे वे सारी बातें आज और अभी कही गई हों। वर्तमान समय में हमारे देश में ज्ञानवापी मस्जिद मामला, मथुरा-आगरा तथा कानपुर इत्यादि जगहों पर भड़क रहे हिंदू मुस्लिम दंगे बरबस कबीर के उस पद की याद दिला देते हैं -

साधो, देखो जग बौराना ।

साँची कही तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना ।

हिन्दू कहत,राम हमारा, मुसलमान रहमाना ।

आपस में दौऊ लड़ै मरत हैं, मरम कोई नहिं जाना ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, इनमें कौन दिवाना

कबीर की ये पंक्तियां सिर्फ पंक्तियां नहीं हैं, अगर गौर किया जाए तो आज की इन जटिल समस्याओं का सोचा समझा हल है। आज कबीर को याद करते हुए हम यह पाते हैं कि हमारे यहां कबीर के विचारों को जितना आत्मसात किया जाना चाहिए उतना नहीं किया जा सका। शायद ऐसा होता तो आज लगभग ४०० वर्षों बाद भी कबीर हमारे सामने वैसे के वैसे ना बने होते। आज भी हमारा समाज अपने ईश्वर को कांकर पाथर द्वारा बनाई गई मस्जिदों और तथाकथित धर्म के ठेकेदारों के निजी स्वार्थ सिद्धि हेतु बनाए गए मंदिरों में अपने ईश्वर को खोजता है ऐसे समय में कबीर का निम्नांकित पद विचार करने योग्य है -

मोको कहां ढूँढे रे बन्दे मैं तो तेरे पास में।

ना तीरथ मे ना मूरत में ना एकान्त निवास में

ना मंदिर में ना मस्जिद में ना काबे कैलास में

खोजी होय तुरत मिल जाऊं इक पल की तालास में

कहत कबीर सुनो भई साधो मैं तो हूं विश्वास में।

कबीर का संपूर्ण जीवन दर्शन प्रकृति के साथ चलकर उस निराकार ईश्वर की साधना तक पहुंचाने वाला है, जहां न कोई सामाजिक कुरीति है, न कोई बंधन है, न कोई धार्मिक ठेकेदार है और न कोई धार्मिक संस्थान। अंततः कबीर का संपूर्ण चिंतन विकृत मनुष्य को मनुष्य बनाने वाला है। पोथी-पत्रा, गीता, कुरान, बाइबल इत्यादि से परे कबीर मानवीय जीवन की हिमायत करते हैं और जीवन को गति और मति प्रदान करने वाले अमृत स्वरूप तत्व प्रेम की वकालत करते हैं कबीर कहते हैं-

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम के, पण्डित होय॥

आज हमने ज्ञान विज्ञान के अनेक आविष्कार कर लिए हैं, 14 वीं शताब्दी से 21वीं शताब्दी में पैर रख चुके हैं; फिर भी मानवोचित व्यवहार क्या होना चाहिए, कैसा होना चाहिए, यह हम नहीं जान सके । ऐसे में कबीर का उपर्युक्त दोहा हमें चिंता में डाल सकता है। आज महान् संत कबीरदास की जयंती पर उनके लिए सच्ची स्मरणांजलि यही होगी कि - हम उनकी बातों पर विचार करें, हमारे समय की कसौटी में जो बातें खरी उतरें - उनकी उन बातों को आत्मसात करें और एक मुकम्मल मानवीय एवं समरस समाज का निर्माण करने का सार्थक प्रयास करें।

(लेखक शोधार्थी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा है)

सू- दोकू क्र.76

	8				1		5	
6			8			2		3
	3				2		1	
		3		9		5		4
5			3				9	
		4		2				6
4			2		3		6	
		6				8		7
	2	9	7		6			

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र 75 का हल

5	3	9	7	4	8	6	2	1
2	1	6	5	9	3	4	7	6
4	7	8	1	6	2	3	5	9
3	6	1	8	5	9	2	4	7
8	5	2	3	7	4	1	9	6
7	9	4	2	1	6	8	3	5
6	4	7	9	2	1	5	6	3
1	8	5	4	3	7	9	6	2
9	2	3	6	8	5	7	1	4

अभिमान से मुक्त होना ही सच्चा ज्ञान

योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'

फक्कड़ मस्त कबीर ने जो कुछ देखा, स्वयं जिसका अनुभव किया, उसी को अपनी साखियों में संजोकर हमें दे दिया ताकि हम भी उस फकीर के अनुभवों से कुछ सीख सकें। यही वजह है कि उनकी रचनाएं आज भी खरी और प्रासंगिक हैं। जाने कितने ही संत और ज्ञानी यही कहते-कहते चले गए कि गर्व यानी मिथ्या अभिमान हमारा सबसे बड़ा शत्रु है, जो हर मनुष्य को भटकाता है और आदमी अपने क्षणभंगुर जीवन को भूल कर अभिमान के झूले में झूलने लगता है। वह सच को जानते हुए भी अनभिज्ञ बना रहता है।

जरा-सा धन आ जाए या फिर किसी को शारीरिक बल मिल जाए या कोई बड़ा पद मिल जाए तो तुरन्त आदमी को यह अभिमान का दैत्य जकड़ लेता है। वह सच्चाई को नजरअंदाज करके भ्रम में जीता रहता है। संत कवि तुलसीदास ने कहा है :-

क्षुद्र नदी भरि चली उतराई।

जस थोरेउ धन खल इतराई।

जब बहुत ज्यादा वर्षा हो जाती है तो छोटी-छोटी नदियां भी खूब उभार लेकर चलती हैं, वैसे ही दुष्ट प्रकृति का आदमी भी थोड़ा-सा धन पाते ही इतराने लगता है। यानी अपनी औकात को भूल कर अभिमान के झूले पर चढ़ कर खूब झूलता है और अंत में गिर जाता है। सही मायने में अभिमान अज्ञानता का ही प्रतीक है।

'अभिमान' मानव को कैसे विवेकहीन बना देता है, इसका बड़ा ही सुंदर और प्रेरक दृष्टांत हमारे शास्त्रों में मिलता है, जिसे पाठकों के संज्ञान में आना चाहिए ताकि अभिमान से बचा जा सके। दृष्टांत इस प्रकार है :-

शारीरिक अपूर्णता के चरमोत्कर्ष के प्रतीक महर्षि अष्टावक्र प्रसिद्ध विद्वान ऋषि कहोड़ के पुत्र और महर्षि उद्दालक के दौहित्र थे। ऋषि कहोड़ राजर्षि जनक की विद्वत सभा में आचार्य बंदी से शास्त्रार्थ में पराजित होने पर शास्त्रार्थ के नियमानुसार आचार्य बंदी के दास हो गए थे। अपने विद्वान पिता को दासत्व के अपमान से मुक्ति दिलाने के लिए मात्र 12 वर्ष के बालक अष्टावक्र ने जनक की विद्वत सभा में आचार्य बंदी से शास्त्रार्थ कर जब आचार्य बंदी को पराजित कर दिया, तब पराजित आचार्य बंदी अष्टावक्र के समक्ष दासभाव से खड़े हो गए और उन्होंने अपनी पराजय स्वीकार करते हुए बालक अष्टावक्र से कहा-आप जो भी दंड देंगे, वह मुझे स्वीकार है।

इसके उपरांत अष्टावक्र ने विनम्र भाव से कहा-आचार्य, मैं आपको मुक्त करता हूं। आज यही आपका दण्ड है आचार्य, क्योंकि पराजय तो स्वयं में ईश्वर द्वारा दिया गया एक कठोर दण्ड होता है। जो पराजित हो जाए, उसे दंडित करना सही मायने में एक अमानवीय व्यवहार है। आपने तो निश्चित रूप से यह अपराध किया है, परंतु मैं यह अपराध नहीं करूंगा।

सिर झुकाए खड़े आचार्य बंदी से अष्टावक्र ने अत्यंत विनम्रतापूर्वक कहा- मैं बस यही कहूंगा कि जो ज्ञान व्यक्ति में घमंड भर दे, वह ज्ञान पूर्णतः निरर्थक है। आप अभिमान जैसे भौतिक दुर्गुणों से भरे हुए हैं। मैं आपको क्षमा करते हुए अपने दासत्व से मुक्त करता हूं, परंतु याद रखें आचार्य, स्वयं के दासत्व से मुक्त होने के लिए आपको कठिन प्रयत्न करना होगा। हे आचार्य, मनुष्य का स्वयं के दासत्व यानी अभिमान से मुक्त हो जाना ही सच्चा ज्ञान होता है। महर्षि अष्टावक्र ने आगे स्पष्ट करते हुए कहा कि मैं यहां आपको पराजित करने नहीं आया था, बल्कि अपने विद्वान पिता को आपके दासत्व से मुक्ति दिलाने आया था, क्योंकि पिता को दासत्व से मुक्ति दिलाना ही पुत्र का प्रथम कर्तव्य होता है। मैं यहां पराजय विजय से परे महज पुत्र का दायित्व निभाने के लिये आया था।

शारीरिक अपूर्णता के चरमोत्कर्ष के प्रतीक अष्टावक्र का यह दृष्टान्त हमारी आंखें खोलने के लिए काफी है। उनकी कही बातें आज भी सटीक हैं। निस्संदेह, ऐसी विद्वत्ता किस काम की, जो दूसरे विद्वान को 'दास' बनाकर स्वयं को बड़ा समझने का अभिमान देती हो यह सोच विद्वता की धारणा के ही विरुद्ध है।

यहां अष्टावक्र द्वारा आचार्य बंदी को क्षमा करके जो व्यवहार किया गया, उसने आचार्य के हृदय में बैठे उनके शत्रु घमंड से उन्हें मुक्ति दिला दी और वे सचमुच ही आचार्य बन गए।

व्यासी परियोजना प्रभावित 27 परिवारों को 26 लाख के चैक वितरित

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। व्यासी प्रतिकर मामला लखवाड़ प्राजेक्ट की चाल धीमी कर रहा था। डीएम के सामने मामला आते ही डीएम ने सम्बन्धित प्रभावितों के साथ बैठक बुलाकर एसडीएम व यूजेवीएन को 15 दिन में मामला निस्तारण के निर्देश दिए थे, जिसके फलस्वरूप प्रभावितों को प्रतिकर धनराशि के चैक वितरित कर दिए गए हैं। व्यासी परियोजना के ग्राम लौहारी के हितबद्ध व्यक्तियों को बंजर भूमि पर स्थित परिसम्पति का प्रतिकर चौक भी वितरित भी किए गए। लगभग 4 वर्षों से प्रतिकर मुआवजे के लिए विभिन्न फोरम पर आवाज उठा रहे लौहारी निवासियों की समस्या का समाधान हो गया है जिस डीएम ने विगत माह बैठक लेते हुए यूजेवीएन के अधिकारियों को कड़ी फटकार लगाई थी। इसी के फलस्वरूप संयुक्त मजिस्ट्रेट गौरी प्रभात तथा एसएलओ स्मृति परमार के प्रयासों से कुल 27 परिवारों को लभगभ 26 लाख के चैक वितरित किए। जिससे जनमानस में सरकार के प्रति विश्वास बढा है तथा क्षेत्र में परियोजनाओं को धरातल पर उतारने को जनमानस का सहयोग मिलने लगा है।

बिजली चोरी में मुकदमा दर्ज

संवाददाता

देहरादून। बिजली चोरी के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार केवी विद्युत उपसंस्थान कालसी परम सिंह चौहान ने बताया कि उसने क्वानू रोड सहिया कालसी में तोताराम के यहां पर छापा मारा तो वहां पर विद्युत लाईन पर कटिया डालकर बिजली चोरी करते हुए पकड लिया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

पुलिस ने छात्राओं को सिखाए आत्मरक्षा के गुर

संवाददाता

उत्तरकाशी। पुलिस ने छात्राओं को आत्मरक्षा के गुर सिखाने के साथ ही महिला अपराधों के प्रति जागरूक भी किया।

आज यहां उत्तराखण्ड पुलिस द्वारा गौरा शक्ति योजना के अंतर्गत बालिकाओ/महिलाओं को आत्मरक्षा के तरीके सिखाने एवं आपराधों के प्रति जागरुक करने हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम मे पुलिस अधीक्षक उत्तरकाशी के निर्देशन में उत्तरकाशी पुलिस की टीम द्वारा विभिन्न स्कूलों में जनजागरुकता/प्रशिक्षण शिविर आयोजित कर महिला सशक्तिकरण के प्रयास किये जा रहे हैं। कस्तूरा गांध ी आवासीय बालिका विद्यालय, कण्डियाल गांव पुरोला महिला सुरक्षा पर जनजागरुकता/आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिवर आयोजित कर प्रशिक्षित महिला कांस्टेबल किरन एवं महिला कांस्टेबल बबीता द्वारा स्कूली छात्राओं को विभिन्न प्रकार के आत्मरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया। शिविर मे पुलिस टीम द्वारा छात्राओं को नये कानून में प्रदत्त महिला अधिकारों की जानकरी देते हुये, बालिकाओं/महिलाओं को अपनी आत्मरक्षा के प्रति विश्वास पैदा करने का प्रयास किया गया साथ ही आपातकालीन नम्बर 112 व उत्तराखण्ड पुलिस एप्प के गौरा शक्ति फीचर की उपयोगिता के सम्बन्ध मे जानकारी दी गयी।

अपर पुलिस महानिदेशक ने की समीक्षा बैठक, दिये निर्देश

हमारे संवाददाता

नैनीताल। अपर पुलिस महानिदेशक अपराध एवं कानून व्यवस्था उत्तराखंड ने हल्द्वानी में जनपद नैनीताल और ऊधमसिंह नगर के राजपत्रित अधिकारियों के साथ अपराध समीक्षा बैठक की।

डॉ. वी. मुरुगेशन अपर पुलिस महानिदेशक अपराध एवं कानून व्यवस्था उत्तराखंड द्वारा आज कोतवाली हल्द्वानी मीटिंग हॉल में जनपद नैनीताल और ऊधमसिंह नगर के राजपत्रित अधि कारियों के साथ अपराध समीक्षा बैठक की गई। समीक्षा बैठक के दौरान उन्होने सर्किलों में घटित विशेष अपराधों की समीक्षा की और सभी को अपराधों का सफल अनावरण करने के निर्देश दिए गए।

उन्होने क्षेत्राधिकारियों को आवंटित विवेचनाओं की समीक्षा की गई, साक्ष्य संकलन व अन्य आवश्यक कार्यवाही के आधार पर सफल अनावरण करने के निर्देश दिए गए। उन्होने कहा कि सभी क्षेत्राधिकारी संवेदनशील होकर कार्य करें, जनता की अपेक्षाओं पर खरे उतरे। निष्पक्ष होकर विवेचनाओं और जांचों का निस्तारण करें। उन्होने कहा कि केस डायरी का अवलोकन करें। नियमित रूप से अर्दली रूम लेकर अधीनस्थों को आवंटित दायित्वों का सफल निष्पादन करें। सभी सर्किल अधिकारी अपनी प्राथमिक जिम्मेदारी और दायित्वों पर गंभीरता पूर्वक ध्यान दें, अधीनस्थ थानों का प्रभावी पर्यवेक्षण करें। कार्यप्रणाली में सुधार लाएं, जनता के पुलिस पर विश्वास को सुदृढ़ करें। विभागीय कार्यवाही और प्रारंभिक जांचों को समयबद्ध तरीके से निस्तारण करें, अन्यथा जवाबदेही तय की जाएगी। क्राईम ड्राइव अभियान की समीक्षा की गई, सभी को अभियान में सकारात्मक परिणाम हासिल करने के निर्देश दिए गए। वांछित/ईनामी अपराधि यों की धरपकड़ की जाय। वांछित अपराधि यों के विरुद्ध ईनाम घोषित की कार्यवाही करें।

गैंगस्टर एक्ट में कार्रवाई पूर्ण कर लें, जनपद प्रभारी इसका फॉलोअप लें। कुर्की/वारंट की शतप्रतिशत तामिली और आरोपियों की गिरफ्तारी की जाय अन्यथा जवाबदेही तय की जाएगी। सभी सर्किल अधिकारी निरीक्षण की कार्यवाही पूर्ण कर लें, थानों में लंबित मालों का निस्तारण कर लिया जाय। समीक्षा गोष्ठी के दौरान रिद्धिम अग्रवाल पुलिस महानिरीक्षक कुमाऊं परिक्षेत्र नैनीताल, प्रहलाद नारायण मीणा, एसएसपी नैनीताल, मणिकांत मिश्रा एसएसपी उधम सिंह नगर, प्रकाश चंद्र एसपी सिटी हल्द्वानी समेत नैनीताल और ऊधमसिंह नगर के सभी अपर पुलिस अधीक्षक और क्षेत्राधिकारी मौजूद रहे।

शराब के साथ दो गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। पुलिस ने शराब के साथ दो लोगों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार ऋषिकेश कोतवाली पुलिस ने आईडीपीएल गोल चक्कर के पास एक स्कूटी सवार को रूकने का इशारा किया। पुलिस को देख वह स्कूटी को तेजी से भगा ले गया। पुलिस ने पीछा कर उसको थोडी दूरी पर ही दबोच लिया। तलाशी लेने पर पुलिस ने उसके कब्जे से 100 पव्वे शराब के बरामद किये। पूछताछ में उसने अपना नाम गणेश सिंह पुत्र मुकेश सिंह निवासी चन्द्रेश्वर नगर बताया। वहीं ऋषिकेश पुलिस ने चन्द्रभागा पुल के नीचे से एक व्यक्ति को 49 पव्वे शराब के साथ गिरफ्तार किया। जिसने अपना नाम राहुल जाटव पुत्र छोटे लाल निवासी झुग्गी झोपडी गोविन्द नगर बताया।

तमंचे सहित एक दबोचा

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। वारदात की फिराक में घूम रहे एक बदमाश को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिसके पास से एक तमंचा व बाइक बरामद की गयी है।

जानकारी के अनुसार बीती रात थाना झबरेडा पुलिस गश्त पर थी। इस दौरान जब पुलिस फाजिलपुर से हरजौली झोझा गांव जाने वाले रास्ते पर पहुंची तो उसे वहां बाइक सवार एक संदिग्ध आता हुआ दिखायी दिया। पुलिस ने जब उसे रूकने का इशारा किया तो वह सकपका कर भागने लगा। इस पर उसे घेर कर रोका गया। तलाशी के दौरान उसके पास से एक तमंचा बरामद हुआ। पूछताछ में उसने अपना नाम आस मोहम्मद उर्फ आसू पुत्र मोहम्मद समीम निवासी ग्राम नगला कूबडा जनपद हरिद्वार बताया। पुलिस ने उसे आर्म्स एक्ट की धाराओं में गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया गया है।

धामी सरकार प्रदेश में खनन पर श्वेत पत्र जारी करेः धस्माना

संवाददाता

देहरादून। कांग्रेस के प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना ने कहा कि धामी सरकार प्रदेश में खनन पर श्वते पत्र जारी करे।

आज यहां कांग्रेस के प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सूर्यकांत धस्माना ने कहा कि उत्तराखंड में खनन माफिया का राज चल रहा है और प्रदेश की गरीब जनता खनन माफिया के राज में लुट भी रही है और पिट मर भी रही है और यह सब भाजपा सरकार की आंखों के सामने हो रहा है। भाजपा के वरिष्ठ नेता पूर्व मुख्यमंत्री व हरिद्वार सांसद त्रिवेंद्र सिंह रावत के लोक सभा में दिए गए वक्तव्य को हथियार बनाते हुए धस्माना ने कहा कि कांग्रेस के आरोपों की पुष्टि भाजपा के ही सांसद जो स्वयं इस राज्य के मुख्यमंत्री रह चुके हैं उन्होंने लोकसभा में अपने वक्तव्य दे कर कर दी है जिसमें उन्होंने उत्तराखंड में अवैध खनन, अवैध लदान ढुलान में लगे डंपरों व अन्य भारी वाहनों से रोजाना होने वाली दुर्घटनाओं का जिक्र किया है उससे उत्तराखंड में चल रहे खनन के काले धंधे का पर्दाफाश कर दिया है।

धस्माना ने कहा कि त्रिवेंद्र सिंह रावत ने इससे पहले भी लोकसभा में यह मुद्दा उठाया था और अब एक बार फिर उनके आरोप दोहराने से यह बात पुख्ता हो गई है कि खनन पर कांग्रेस जो आरोप लगा रही है वो सत्य हैं और अब धामी सरकार को इस पर श्वेत पत्र जारी कर स्थिति स्पष्ट करने चाहिए। धस्माना ने कहा कि खनन में एक बाहरी कंपनी को रवन्ना जारी करने का अधिकार दिया गया है और वो अपने अनुसार रेत बजरी पत्थर आदि खनिजों की रॉयल्टी काटता है जिससे आज प्रदेश में निर्माण सामग्री के भाव कई गुणा बढ़ गए हैं और आम आदमी का मकान बनाने का सपना दूर की कौड़ी होता जा रहा है। धस्माना ने कहा कि यही कंपनी बिना परमिट के गाड़ियों में अवैध लदान ढुलान करवाती है और इसमें।लगे वहां अक्सर ओवरलोडिंग कर चलते हैं जिससे और दिन प्रदेश के अलग अलग हिस्सों में लोग मारे जा रहे हैं। धस्माना ने कहा कि यह बड़ा व गंभीर मुद्दा है और कांग्रेस इस पर चुप नहीं बैठेगी। पत्रकार वार्ता में प्रदेश कांग्रेस के महामंत्री राजेंद्र शाह, प्रवक्ता डॉक्टर प्रतिमा सिंह , प्रवक्ता गिरिराज किशोर हिंदवाण व श्री दिनेश कौशल उपस्थित रहे।

एक नजर

एओआई उत्तराखण्ड का 18वां वार्षिक सम्मेलन सफलतापूर्वक संपन्न

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। दि असोसिएशन ऑफ ओटोलेरिंगोलॉजिस्ट ऑफ इंडिया, उत्तराखंड शाखा (एओआई उत्तराखण्ड) का 18वां वार्षिक सम्मेलन 28 से 30 मार्च 2025 तक मसूरी में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह सम्मेलन एओआई देहरादून शाखा द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. आलोक जैन (अध्यक्ष, नैव्), डॉ. एस. एस. बिष्ट (सचिव, नैव्), डॉ. अनूप कौशल (आयोजन अध्यक्ष), डॉ. अश्विन गर्ग (आयोजन सचिव), डॉ. विनीश अग्रवाल (संयुक्त आयोजन सचिव) और डॉ. चेतन बंसल (कोषाध्यक्ष) की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस अवसर पर राज्य एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. डी. एम. काला को ईएनटी के क्षेत्र में उनके अतुल्य योगदान के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में उत्तराखंड एवं। आसपास के राज्यों से 100 से अधिक ईएनटी सर्जनों ने भाग लिया।

डीएम के आदेश पर शिक्षा माफियाओं पर मुकदमें दर्ज!

देहरादून (कासं)। जिला प्रशासन ने बड़े हुए मूल्य पर किताबें बेचने, बिना बिल के किताबें नोटबुक तथा अन्य सामान बेचने जीएसटी की चोरी, बिना बार कोडिंग के किताबें बेचने की शिकायतों पर संज्ञान लेते हुए कई बुक सेलर की दुकानों में एक साथ छापेमारी की। इस दौरान कई दुकानों को सीज किया गया और संगीन धाराओं में प्राथमिक की दर्ज की गई। जिले में डीएम सविन बंसल की सख्ती के चलते उन प्रमुख किताब विक्रेताओं पर शिकंजा कसा गया है, जिनकी स्कूलों से मिलीभगत की लगातार शिकायतें अभिभावकों द्वारा की जा रही थीं। इन दुकानों से अभिभावकों को अनावश्यक महंगी किताबें और स्टेशनरी खरीदने के लिए मजबूर किया जा रहा था। जांच में जीएसटी चोरी और फर्जी प्रकाशन से जुड़े दस्तावेज सामने आने के बाद प्रशासन ने यूनिवर्सल बुक डिपो, नेशनल बुक डिपो और ब्रदर पुस्तक भंडार पर बड़ी कार्रवाई करते हुए इनके खिलाफ संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है।

पुलिस ने 54 लोगों के किये सत्यापन, चार मकान मालिकों के काटे चालान

संवाददाता

उत्तरकाशी। पुलिस ने सत्यापन अभियान चलाकर 54 लोगों के सत्यापन करने के साथ ही किरायेदारों का सत्यापन ना कराने पर चार मकान मालिकों के चालान किये। आज यहां पुलिस अधीक्षक उत्तरकाशी के निर्देशन में उत्तरकाशी पुलिस का सत्यापन अभियान लगातार जारी है, आज सुबह थानाध्यक्ष पुरोला मोहन सिंह कठैत के नेतृत्व में पुरोला पुलिस टीम द्वारा पुरोला क्षेत्र में सत्यापन अभियान चलाकर बाहरी व्यक्तियों /मजदूरों/ फड़-फेरी, रेड़ी/ठेले लगाने वाले 54 के सत्यापन प्रपत्र भरकर जांच हेतु भेजे गये, जबकि किरायेदार सत्यापन न करवाने पर 4 मकान मालिकों के चालान किये गये। इस दौरान पुलिस टीम द्वारा बाहरी व्यक्तियों/मजदूरों तथा मकान मालिक/ठेकेदारों को पुलिस सत्यापन की अनिवार्यता के प्रति जागरूक किया गया।

युवती से दुष्कर्म का आरोपी पंजाब से गिरफ्तार

संवाददाता

देहरादून। युवती से दुष्कर्म के आरोपी को पुलिस ने पंजाब से गिरफ्तार कर युवती को उसके चंगुल से आजाद कर परिजनों को सौंपा। पुलिस ने उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार पटेलनगर निवासी एक व्यक्ति द्वारा कोतवाली पटेलनगर पर अपनी पुत्री के बिना बताये घर से कही चले जाने के सम्बन्ध मे एक लिखित तहरीर दी गई, प्राप्त तहरीर के आधार पर तत्काल थाना पटेलनगर पर गुमशुदगी दर्ज कर जांच शुरू कर दी। उक्त व्यक्ति द्वारा नूर मोहम्मद नाम का लड़के द्वारा उनकी पुत्री को बहला फुसला कर भगा ले जाने के संबंध में जानकारी दी गयी, जिस पर प्रार्थना पत्र दिया गया जिस पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

घटना की गंभीरता एवं संवेदनशीलता की दृष्टिगत वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अजय सिंह द्वारा दिए गए निर्देशों के क्रम में थाना स्तर पर पुलिस टीम का गठन किया गया, पुलिस टीम द्वारा आरोपी के संबंध में सुरागरसी/पतारसी करते हुए जानकारियां एकत्रित की गई।

पुलिस टीम द्वारा किये जा रहे प्रयासों के दौरान पुलिस टीम को आरोपी के पंजाब में होने की जानकारी मिली, प्राप्त जानकारी के आधार पर आरोपी की गिरफ्तारी एवं अपहर्ता की सकुशल बरामदगी हेतु एक टीम को तत्काल गैर प्रान्त पंजाब रवाना किया गया, जहाँ टीम द्वारा आरोपी के संबंध में गोपनीय रूप से जानकारी एकत्रित करते हुए नूर मोहम्मद पुत्र मोहम्मद नसीम को अमृतसर पंजाब से गिरफ्तार किया गया, जिसके कब्जे से अपहर्ता को बरामद करते हुए उसके परिजनों के सुपुर्द किया गया। पुलिस ने उसको न्यायालय में पेश किया जहां से उसको न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया।

अज्ञात वाहन की चपेट में आकर मोटरसाईकिल सवार युवक की मौत

संवाददाता

देहरादून। अज्ञात वाहन की चपेट में आकर मोटरसाईकिल सवार युवक की मौत हो गयी जबकि उसका साथी गम्भीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार कैनाल रोड बाईपास रोड विकासनगर निवासी मासूम अली ने सहसपुर थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसका पुत्र जुबेर अपने दोस्त अजमल के साथ अपनी मोटरसाईकिल से घर की तरफ आ रहा था जब वह आसन पुल पर पहुंचा तभी अज्ञात वाहन ने उनको अपनी चपेट में ले लिया जिससे उसके बेटे जुबेर की मौके पर ही मौत हो गयी थी जबकि अजमल गम्भीर रूप से घायल हो गया जिसको अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

तहसीलदार के वाहन को मारी टक्कर, मुकदमा दर्ज

संवाददाता

देहरादून। तहसीलदार के वाहन पर टक्कर मारने के मामले में पुलिस ने कार चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार तहसीलदार विकासनगर विवेक राजोरी ने प्रेमनगर थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि वह अपने वाहन से विकासनगर की तरफ जा रहे थे जब वह नन्दा की चौकी उत्तरांचल यूनिवर्सिटी के सामने पहुंचे तभी एक कार चालक ने तेजी व लापरवाही से कार को चलाते हुए उनके सरकारी वाहन पर टक्कर मार कर उसको क्षतिग्रस्त कर दिया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

पांच दिन से लापता महिला का शव जंगल से बरामद

हमारे संवाददाता

नैनीताल। पांच दिन से लापता महिला का शव संदिग्ध परिस्थितियों में जंगल से बरामद हुआ है। सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार बीते 26 मार्च को नवाबी रोड स्थित अपने घर से संदिग्ध हालातों में लापता हुई महिला का शव कालीचौड़ के जंगल में बरामद हुआ है। पुलिस ने मृतका की पहचान 38 वर्षीय नेहा उप्रेती के रूप में की है। बताया जा रहा है कि उप्रेती सदन, नवाबी रोड, एस्सार पेट्रोल पंप के पास रहने वाली नेहा उप्रेती बीते 26 मार्च को अपने घर से संदिग्ध हालातों में लापता हो गई थी। वह अपने बहन के घर जाने की बात कहकर घर से निकली थी, जिसके बाद वापस नहीं लौटी थी। काफी ढूंढने के बाद परिजनों ने उसकी गुमशुदगी स्थानीय कोतवाली में करवा दी थी। दर्ज रिपोर्ट में बताया गया था कि वह मानसिक रूप से भी कुछ अस्वस्थ है। आज सुबह कुछ लोगों ने एक शव जंगल में देखा। जिसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलने पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची। काठगोदाम थाना प्रभारी दीपक बिष्ट ने मामले की जांच की। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

मकान का ताला तोडकर गहने व नगदी चोरी

संवाददाता

देहरादून। पशुलोक विस्थापित कालोनी निवासी विनोद कुमार ने ऋषिकेश कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि वह परिवार के साथ बाहर गया था। जब वह आज वापस आया तो उसने देखा कि उसके मकान का ताला टूटा हुआ था तथा अन्दर सारा सामान बिखरा हुआ था। चोर उसके यहां से जेवरात व नगदी चोरी करके ले गये हैं। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।